RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 031
दि. 03.11.2025, सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

भारत की बेटियों ने रचा इतिहास: महिला क्रिकेट टीम बनी विश्व चैंपियन, पूरे देश में जश्न का माहौल

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने रविवार को नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम में इतिहास रचते हुए आईसीसी महिला विश्व कप का खिताब जीत लिया। यह जीत न केवल एक खेली उपलब्धि है, बल्कि भारतीय बेटियों की मेहनत, समर्पण और अटूट आत्मविश्वास की मिसाल भी है। पहली बार विश्व कप अपने नाम करने वाली टीम इंडिया ने दक्षिण अफ्रीका को 52 रनों से हराकर देश को गौरवान्वित कर दिया। यह जीत 2005 और 2017 में फाइनल तक पहुंचने के बाद अधूरे सपनों को पूरा करने का क्षण थी। टीम इंडिया ने इस बार न केवल अपने खेल से बल्कि अपने जज़्बे और धैर्य से भी सबका दिल जीत लिया। इस जीत के बाद देशभर में जश्न का माहौल है — दिल्ली से लेकर चेन्नई और लखनऊ से लेकर गुवाहाटी तक सड़कों पर लोगों ने मिठाइयां बांटीं, ढोल-नगाड़े बजे और "भारत माता की जय" के नारे गूंज उठे।

शैफाली और दीप्ति का जलवा, टीम इंडिया का शौर्य

फाइनल मुकाबले में भारतीय बल्लेबाज़ शैफाली वर्मा ने शानदार अर्धशतक जड़ा, जबकि दीप्ति शर्मा ने हरफनमौला प्रदर्शन करते हुए न सिर्फ बल्लेबाज़ी में कमाल दिखाया बल्कि गेंदबाज़ी में भी विपक्षी टीम को ध्वस्त कर दिया। कप्तान हरमनप्रीत कौर की रणनीतिक सूझबूझ और टीम के सामूहिक प्रदर्शन ने भारत को इस ऐतिहासिक जीत तक पहुंचाया। मैच के बाद कप्तान हरमनप्रीत कौर की आंखों में खुशी के आंसू थे। उन्होंने कहा, "यह सिर्फ हमारी नहीं, पूरे भारत की जीत है। हमने सालों की मेहनत, त्याग और विश्वास से यह मुकाम हासिल किया है। हम चाहती हैं कि हर लड़की बड़े सपने देखे और उन्हें पूरा करने का साहस रखे।"

गौतम गंभीर बोले – इतिहास नहीं, विरासत बनाई है बेटियों ने

टीम इंडिया की इस अभूतपूर्व सफलता पर पूर्व क्रिकेटर और मुख्य कोच गौतम गंभीर ने कहा, "आपने न केवल इतिहास रचा है बल्कि एक ऐसी विरासत बनाई है जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगी। ये जीत भारतीय क्रिकेट के नए युग की शुरुआत है। अब भारत में हर बेटी क्रिकेट को अपने करियर के रूप में अपनाने से नहीं हिचकेगी।"

कोहली और सचिन ने भी जताया गर्व

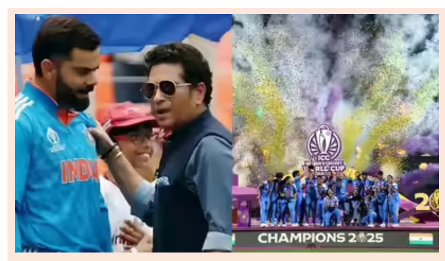

विराट कोहली ने सोशल मीडिया पर लिखा, "इतने वर्षों की मेहनत आखिरकार साकार हुई। यह टीम उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है जिसने कभी हार नहीं मानी। हरमन और पूरी टीम को इस ऐतिहासिक पल के लिए बधाई। यह जीत आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनेगी।" महान बल्लेबाज़ सचिन तेंदुलकर ने इसे 1983 की पुरुष टीम की जीत के समान ऐतिहासिक बताते हुए कहा, "1983 ने भारतीय क्रिकेट को दिशा दी थी, और आज हमारी बेटियों ने नया युग शुरू किया है। उन्होंने लाखों लड़कियों को यह विश्वास दिलाया है कि सपनों की कोई सीमा नहीं होती। आज हर भारतीय गर्व से सिर उठा सकता है।"

प्रधानमंत्री मोदी ने टीम इंडिया को दी बधाई

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारतीय महिला क्रिकेट टीम को विश्व कप जीतने पर हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने ट्वीट कर लिखा, ICC महिला क्रिकेट विश्व कप 2025 के फाइनल में भारतीय टीम की शानदार जीत! फाइनल में उनका प्रदर्शन अद्भुत कौशल और आत्मविश्वास से भरा था। पूरे टूर्नामेंट में टीम ने असाधारण टीमवर्क और दृढ़ता दिखाई। यह ऐतिहासिक जीत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगी।

अमित शाह बोले — यह भारत का गौरवशाली क्षण

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने ट्वीट करते हुए कहा, विश्व चैंपियन टीम इंडिया को सलाम! यह देश के लिए एक गौरवशाली क्षण है। हमारी बेटियों ने ICC महिला विश्व कप 2025 जीतकर भारत का नाम ऊंचा कर दिया है। यह जीत लाखों लड़कियों को अपने सपनों की उड़ान भरने के लिए प्रेरित करेगी। पूरी टीम को हार्दिक बधाई। यह जीत सिर्फ एक खेल उपलब्धि नहीं, बल्कि भारतीय महिला क्रिकेट के सुनहरे युग की शुरुआत है। इन बेटियों ने साबित कर दिया कि जब हिम्मत, मेहनत और जुनून एक साथ चलते हैं, तो इतिहास लिखा जाता है — और आज भारत ने इतिहास लिख दिया है।

ट्रंप की चेतावनी से अंतरराष्ट्रीय हलचल: नाइजीरिया को दी सैन्य कार्रवाई की धमकी, बोले — "ईसाइयों पर हमले रुके नहीं तो अमेरिका खुद करेगा जवाब"

(जीएनएस)। वॉशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति और रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर वैश्विक राजनीति में हलचल मचा दी है। उन्होंने नाइजीरिया को सख्त चेतावनी देते हुए कहा है कि अगर वहां की सरकार ईसाइयों पर हो रहे हमलों को रोकने में नाकाम रहती है, तो अमेरिका को "सीधी सैन्य कार्रवाई" के लिए तैयार रहना होगा। ट्रंप का यह बयान ऐसे समय में आया है जब अफ्रीकी देशों में धार्मिक हिंसा और आतंकवादी हमलों की घटनाएं बढ़ी हैं, और वॉशिंगटन पहले ही नाइजीरिया पर मानवाधिकार उल्लंघन के आरोपों को लेकर कड़ा रुख अपना चुका है। ट्रंप ने यह संदेश अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म "ट्रुथ सोशल" पर साझा करते हुए लिखा, "नाइजीरिया में ईसाइयों की हत्या अब असहनीय स्तर पर पहुंच चुकी है। अगर सरकार इस नरसंहार को रोकने में विफल रहती है, तो संयुक्त राज्य अमेरिका हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठेगा। रक्षा विभाग (Pentagon) को आवश्यक तैयारी के निर्देश दिए जा चुके हैं।" उन्होंने आगे कहा कि "किसी भी संभावित सैन्य कार्रवाई में अमेरिकी बल तेजी, सटीकता और निर्णायकता से काम करेंगे।"

उनकी यह टिप्पणी अमेरिकी विदेश नीति में फिर से "आक्रामक हस्तक्षेपवाद" के संकेत के रूप में देखी जा रही है। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि ट्रंप का यह बयान न केवल नाइजीरिया बल्कि पूरे अफ्रीकी महाद्वीप में कूटनीतिक हलचल पैदा कर सकता है।

नाइजीरियाई सरकार ने जताई आपत्ति

नाइजीरिया के राष्ट्रपति बोला अहमद टीनूबू ने ट्रंप के बयान को "भ्रामक और अस्वीकार्य" बताया है। टीनूबू ने कहा कि "नाइजीरिया धार्मिक सहिष्णुता और विविधता में विश्वास रखने वाला देश है। हमारे सामने सुरक्षा से जुड़ी कई जटिल चुनौतियाँ हैं, जिनमें उग्रवाद, जातीय संघर्ष और आर्थिक असमानता शामिल हैं। अमेरिका को हमारे आंतरिक मामलों पर ऐसी सार्वजनिक टिप्पणियों से बचना चाहिए।" नाइजीरियाई विदेश मंत्रालय ने भी अमेरिकी चेतावनी को लेकर औपचारिक विरोध दर्ज कराया है। मंत्रालय की प्रवक्ता ने कहा कि "नाइजीरिया आतंकवाद के खिलाफ सख्त कार्रवाई कर रहा है। अमेरिकी सरकार को सहयोग का रुख अपनाना चाहिए, धमकी का नहीं।"

दशकों पुराना संघर्ष और असंतुलन

नाइजीरिया में ईसाई और मुस्लिम आबादी लगभग समान है, लेकिन उत्तर और मध्य क्षेत्रों में वर्षों से सांप्रदायिक तनाव बना हुआ है। उग्रवादी संगठन बोको हरम और आईएसडब्ल्यूएपी (ISWAP) ने पिछले एक दशक में हजारों लोगों की जान ली है और लाखों को विस्थापित किया है। अमेरिकी विदेश विभाग की कई रिपोर्टों में नाइजीरिया को "धार्मिक स्वतंत्रता के लिए चिंताजनक देश" करार दिया गया है। हाल के महीनों में उत्तर-पश्चिमी नाइजीरिया में ईसाई समुदायों पर हमलों की घटनाएँ फिर बढ़ी हैं। मानवाधिकार संगठनों के अनुसार, सिर्फ इस वर्ष 2,000 से अधिक ईसाई मारे गए हैं। अमेरिका ने पहले भी इन हमलों की निंदा की थी, लेकिन यह पहली बार है जब किसी शीर्ष अमेरिकी नेता ने खुले तौर पर सैन्य विकल्प का संकेत दिया है।

राजनीतिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य

ट्रंप की इस चेतावनी को कई विशेषज्ञ अमेरिकी घरेलू राजनीति से भी जोड़कर देख रहे हैं। अमेरिका में 2024 के राष्ट्रपति चुनाव से पहले ट्रंप लगातार "क्रिश्चियन वोट बैंक" को अपने पक्ष में करने की कोशिश में हैं।

जंगलराज का चेहरा बदलकर लौटने की कोशिश, लेकिन जनता सच जानती है: अमित शाह का तेजस्वी पर तीखा प्रहार, कहा – नीतीश ही एनडीए का चेहरा, भारत कोई धर्मशाला नहीं

(जीएनएस)। पटना। बिहार विधानसभा चुनाव के बीच सियासी बयानबाजी अब अपने चरम पर पहुंच चुकी है। सत्ता और विपक्ष दोनों ओर से आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी है। इसी क्रम में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को एक राष्ट्रीय समाचार चैनल को दिए साक्षात्कार में विपक्ष पर तीखे हमले किए और बिहार के मतदाताओं को "जंगलराज" की वापसी के ख़तरे से आगाह किया। शाह ने कहा, "बिहार में जंगलराज फिर से चेहरा और भेष बदलकर लौटना चाहता है, लेकिन जनता अब बहुत समझदार है। उसे पता है कि कौन विकास की राजनीति करता है और कौन भय व अपराध की।"

शाह ने कहा कि इस चुनाव में एनडीए का नेतृत्व पूरी तरह स्पष्ट है और किसी तरह का भ्रम नहीं होना चाहिए। "नीतीश कुमार ही मुख्यमंत्री पद का चेहरा हैं। भाजपा और जदयू एकजुट होकर चुनाव लड़ रहे हैं। कुछ लोग हर बार यह भ्रम फैलाने की कोशिश करते हैं कि एनडीए में मतभेद हैं, लेकिन बिहार की जनता जानती है कि नीतीश जी का नेतृत्व अटूट और स्थिर है।"

तेजस्वी यादव पर निशाना साधते हुए शाह ने कहा कि "उनका डीएनए वही पुराना 'जंगलराज' वाला है। चेहरा बदल गया है लेकिन सोच वही है। 10 लाख सरकारी नौकरियों का वादा पूरी तरह अव्यावहारिक है। बिहार के बजट का चार गुना बढ़ना संभव नहीं है। ऐसे वादे सिर्फ जनता को भ्रमित करने के लिए हैं।" उन्होंने आगे कहा कि भाजपा की 'लखपति दीदी' योजना बिहार की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का सच्चा खाका है। "हम दिखावे की नहीं, धरातल पर विकास की राजनीति करते हैं," शाह ने जोड़ा।

गृह मंत्री ने बिहार से पलायन के मुद्दे पर कहा कि इसका स्थायी समाधान स्वरोजगार है। "अगर कोई युवा अपने गांव में ही 20–25 हजार रुपये कमा सके तो वह न मुंबई जाएगा, न दिल्ली। इसलिए सरकार हर पंचायत में लघु उद्योग और माइक्रो-एंटरप्राइज को प्रोत्साहन दे रही है। हमारा लक्ष्य है कि बिहार आत्मनिर्भर बने।"

तेजस्वी यादव पर और भी सख्त लहजे में वार करते हुए शाह बोले, "बिहार की जनता को यह नहीं भूलना चाहिए कि तेजस्वी सिर्फ नाम में नया चेहरा हैं, असली नियंत्रण आज भी लालू यादव के पास है। जो लोग अपराध, भ्रष्टाचार और जातिवाद के सहारे सत्ता में बने रहे, वे अब फिर से उसी अंधेरे युग को लौटाना चाहते हैं। लेकिन बिहार अब बदल चुका है। यहाँ की जनता विकास, शिक्षा और रोज़गार चाहती है, न कि फिर से भय और बंदूक की राजनीति।"

प्रशांत किशोर की नई पार्टी को लेकर पूछे सवाल पर शाह ने व्यंग्य किया — "देश में पहले से ही 1550 राजनीतिक पार्टियाँ हैं, अब 1551 हो गई। जनता समझदार है, वह जानती है कि कौन स्थायी विकल्प है। भाजपा अकेले 160 से अधिक सीटें जीतेगी और बिहार में फिर से स्थिर सरकार बनेगी।"

शाह ने साक्षात्कार में नक्सलवाद के मुद्दे पर भी अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि "केंद्र सरकार ने ठान लिया है कि 31 मार्च 2026 तक नक्सलवाद का पूरी तरह सफाया कर दिया जाएगा। पहले नक्सल गतिविधियाँ 130 जिलों में फैली थीं, आज यह केवल 11 जिलों में सीमित रह गई हैं। आने वाले दो वर्षों में यह भी खत्म हो जाएगी।"

घुसपैठ और मतदाता सूची में फर्जी नामों के सवाल पर शाह ने साफ कहा — "भारत कोई धर्मशाला नहीं है। हमारे देश में हर नागरिक को अधिकार हैं, लेकिन घुसपैठियों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। बिहार में मतदाता सूची से करीब 35 लाख फर्जी नाम हटाए गए हैं, जिनमें कई अवैध घुसपैठियों के नाम थे। यह राष्ट्र सुरक्षा का मुद्दा है, न कि वोट बैंक की राजनीति का।"

औद्योगिकीकरण और निवेश की चर्चा करते हुए गृह मंत्री ने कहा कि "बिहार अब औद्योगिक नक्शे पर तेजी से उभर रहा है। बरौनी रिफाइनरी से लेकर इथेनॉल उत्पादन तक, राज्य अब आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ा कदम बढ़ा चुका है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दृष्टि है कि बिहार भारत की विकास यात्रा का केंद्र बने। पीएम मित्रा पार्क और मेगा इंडस्ट्रियल कॉरिडोर जैसे प्रोजेक्ट बिहार की सूरत बदल देंगे।"

भविष्य के नेतृत्व को लेकर पूछे गए सवाल पर शाह ने कहा कि भाजपा का काम "नेता बनाने" का नहीं बल्कि "कार्यकर्ता तैयार करने" का है। "हम जनता से नेतृत्व पाते हैं। बिहार में हर वर्ग, हर जाति से युवा कार्यकर्ता उभर रहे हैं। भाजपा विचार की पार्टी है, व्यक्ति की नहीं। जनता तय करेगी कि अगली पीढ़ी का नेता कौन होगा।"

अमित शाह ने साक्षात्कार के अंत में कहा — "भाजपा के लिए चुनाव सत्ता का साधन नहीं, लोकसंग्रह का अवसर है। हम विचार की राजनीति करते हैं, जो विकास और राष्ट्रवाद की धरती पर खड़ी है। बिहार ने हमेशा आगे बढ़ने का रास्ता चुना है और इस बार भी वह जंगलराज की वापसी नहीं, सुशासन की निरंतरता को चुनेगा।"

इस साक्षात्कार के बाद बिहार की सियासत में एक बार फिर नया उबाल आ गया है। तेजस्वी यादव ने शाह के बयान को "भय का प्रचार" बताया है, जबकि जदयू और भाजपा नेताओं ने इसे "सच्चाई का आईना" कहा है। बिहार का चुनावी मैदान अब न केवल विकास बनाम वादों की जंग बन चुका है, बल्कि यह भी तय करेगा कि जनता किस दिशा में अपना भविष्य देखना चाहती है — स्थिरता या फिर अतीत के अंधेरे जंगलराज की वापसी।

नेपाल के मुस्तांग में तबाही : बर्फबारी और भूस्खलन से जनजीवन ठप, 550 से अधिक पर्यटक फंसे

(जीएनएस)। काठमांडू। नेपाल के दुर्गम और ऊँचे हिमालयी क्षेत्र मुस्तांग में बर्फबारी और भूस्खलन ने तबाही मचा दी है। बीते 48 घंटे से लगातार हो रही भारी बर्फबारी और बारिश के कारण सड़कें धँस गईं, पहाड़ों से चट्टानें खिसक गईं और कई जगहों पर बिजली व संचार पूरी तरह ठप हो गया। स्थिति इतनी गंभीर है कि यह इलाका अब देश के बाकी हिस्सों से लगभग कट चुका है। प्रशासन ने बताया कि भारत, चीन, अमेरिका, जर्मनी और जापान समेत कई देशों के 550 से अधिक पर्यटक और 100 से ज्यादा वाहन फँसे हुए हैं। मुस्तांग जिला प्रशासन ने बताया कि जोमसोम–कोरला मार्ग, जो नेपाल-चीन सीमा तक जाने वाला मुख्य रास्ता है, कई स्थानों पर धँस गया है और बड़े पैमाने पर मलबा जमा हो गया है। बागबेनी से लेकर छुसाङ क्षेत्र तक सड़क, बिजली और इंटरनेट सेवाएँ पूरी तरह ठप हैं। स्थानीय पुलिस भी रविवार सुबह तक कई चौकियों से संपर्क स्थापित नहीं कर पाई थी। मुस्तांग पुलिस के डीएसपी छिरिंग किप्पा लामा ने बताया कि "छुसाङ से ऊपर कम से कम छह बड़े भूस्खलन हुए हैं। सड़क के दोनों ओर बर्फ और मलबा जमा है, जिससे वाहनों की आवाजाही पूरी तरह बंद हो गई है। सेना और सिविल प्रशासन के जवान लगातार राहत कार्य में जुटे हैं, लेकिन हालात बेहद चुनौतीपूर्ण हैं।" रविवार को बर्फबारी के बीच राहत दलों ने कागबेनी और आसपास के क्षेत्रों में फँसे हुए कुछ पर्यटकों को अस्थायी रूप से सुरक्षित भवनों और होटलों में पहुँचाया। हालांकि, प्रशासन का कहना है कि लगातार गिरती बर्फ और गिरते तापमान ने राहत कार्यों को बेहद कठिन बना दिया है। जिला प्रमुख अधिकारी बिष्णु प्रसाद भुसाल ने बताया कि अब तक ऊपरी मुस्तांग में 559 पर्यटक और 108 वाहन फँसे होने की पुष्टि हो चुकी है। उन्होंने कहा, "हम फिलहाल सभी फँसे लोगों से सीधे संपर्क नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि संचार नेटवर्क पूरी तरह ठप है। बड़े भूस्खलन हटाने और सड़क साफ करने में कम से कम तीन दिन और लग सकते हैं।" भुसाल ने यह भी बताया कि फँसे हुए लोगों में बड़ी संख्या में भारतीय पर्यटक और कुछ यूरोपीय नागरिक शामिल हैं।

संपादकीय

लोकतंत्र की आत्मा को निर्मल रखने का राष्ट्रीय संकल्प

भारतीय लोकतंत्र की सफलता का मूल आधार उसकी निष्पक्ष, पारदर्शी और विश्वसनीय चुनावी प्रक्रिया है। यह वह व्यवस्था है जो न केवल शासन बदलती है, बल्कि जनविश्वास का निर्माण भी करती है। इसी दिशा में देश के 12 राज्यों में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम के दूसरे चरण की घोषणा भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में दर्ज होगी। यह पहल केवल एक प्रशासनिक कार्रवाई नहीं, बल्कि लोकतंत्र की जड़ों को और गहरा करने वाला राष्ट्रीय अभियान है — एक चुनावी स्वच्छता अभियान, जो मताधिकार की पवित्रता को पुनर्स्थापित करने की दिशा में उठाया गया साहसिक कदम है।

भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक राष्ट्र में मतदाता सूची की शुद्धता मात्र एक तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि यह जनप्रतिनिधित्व की आत्मा से जुड़ा विषय है। चुनाव तभी निष्पक्ष हो सकते हैं, जब मतदाता सूची सटीक, अद्यतन और त्रुटि-मुक्त हो। यह सूची लोकतांत्रिक संरचना का वह आधारस्तंभ है, जिस पर पूरी चुनाव प्रणाली टिकी होती है। गलत या दोहराई गई प्रविष्टियां केवल तकनीकी गलती नहीं होतीं, बल्कि वे लोकतंत्र की साख को कमजोर करती हैं। इसलिए इस अभियान की प्रासंगिकता आज पहले से कहीं अधिक है।

उत्तर प्रदेश जैसे विशाल राज्य को केंद्र में रखें तो इस कार्यक्रम का महत्व और भी बढ़ जाता है। देश के कुल मतदाताओं में लगभग 16 करोड़ मतदाता अकेले उत्तर प्रदेश से आते हैं। यहां के मतदाता आंकड़े न केवल राज्य बल्कि राष्ट्रीय राजनीति की दिशा तय करने की क्षमता रखते हैं। निर्वाचन आयोग के अनुमानों के अनुसार इस बार के पुनरीक्षण अभियान में करीब 25 लाख नए मतदाता जोड़े जाने की संभावना है, वहीं लगभग 12 लाख नाम हटाए जाने की भी। इनमें मृत मतदाता, दोहराई गई प्रविष्टियां और स्थानांतरित मतदाता शामिल हैं। यह संतुलन स्वयं दर्शाता है कि यह प्रक्रिया केवल संख्यात्मक नहीं, बल्कि गुणात्मक सुधार का प्रयास है।

गौरतलब है कि पिछले 21 वर्षों में इस स्तर का कोई व्यापक पुनरीक्षण नहीं हुआ था। यह स्थिति चिंता का विषय थी क्योंकि पुरानी सूचियों में त्रुटियां और पुनरावृत्तियां लगातार बढ़ रही थीं। तकनीकी सीमाएं, प्रशासनिक उदासीनता और राज्यों के बीच समन्वय की कमी इसके पीछे प्रमुख कारण रहे। परंतु अब भारत ने तकनीक को लोकतंत्र की सेवा में लगा दिया है। डिजिटल वेरिफिकेशन, आधार लिंकेज, मोबाइल ऐप आधारित फील्ड एंट्री और ऑनलाइन शुद्धिकरण प्रणाली ने इस प्रक्रिया को न केवल त्वरित बनाया है, बल्कि पारदर्शिता और जवाबदेही भी सुनिश्चित की है।

अब किसी मतदाता का स्थानांतरण, मृत्यु या दोहराव तुरंत डिजिटल रिकॉर्ड में दर्ज हो सकेगा। इससे नकली या फर्जी वोटिंग जैसी समस्याओं पर प्रभावी नियंत्रण संभव होगा। किंतु यह कहना कि तकनीक सबकुछ कर देगी, अतिशयोक्ति होगी। वास्तविक सफलता तभी संभव है जब फील्ड वेरिफिकेशन टीमें पूर्ण प्रशिक्षण, जवाबदेही और निष्पक्षता के साथ काम करें। आयोग को चाहिए कि वह त्रिस्तरीय सत्यापन प्रणाली लागू करे — पहले स्थानीय स्तर पर, फिर जिला स्तर पर और अंततः राज्यस्तरीय ऑडिट के रूप में। तभी मतदाता सूची की पूर्ण शुद्धता सुनिश्चित की जा सकती है।

बिहार के हालिया उदाहरण से इस प्रक्रिया की सफलता स्पष्ट होती है। वहां 65 लाख नाम हटाए गए और 48 लाख नए मतदाता जोड़े गए। लगभग 40 हजार संदिग्ध प्रवासी मतदाताओं की पहचान भी की गई। यह प्रयास यह दिखाता है कि जब प्रशासनिक इच्छाशक्ति और तकनीकी सहयोग मिल जाए, तो लोकतंत्र स्वयं को शुद्ध करने में सक्षम होता है। हालांकि असम को फिलहाल इस सूची से बाहर रखा गया है, क्योंकि वहां राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) और मतदाता सूची के बीच तालमेल जटिल है। वहीं पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल में डेटा गोपनीयता से जुड़ी आपत्तियों पर आयोग ने यह स्पष्ट कर दिया है कि प्रत्येक डेटा सुरक्षित रहेगा और सत्यापन प्रक्रिया में राज्य सरकारों को समान भागीदारी दी जाएगी।

‘रेवड़ी संस्कृति’: लोकतंत्र का आधार या प्रलोभन

> वोट किसी के द्वारा दी जा रही मुफ्त सुविधाओं के लिए नहीं, बल्कि भविष्य की स्थिरता, सुशासन और सच्चे विकास के लिए दिया जाना चाहिए। मतदाता का विवेक ही लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति है। अगर जनता भावनाओं या लालच में निर्णय लेगी, तो राजनीति और शासन दोनों भ्रष्ट हो जाएंगे।

बिहार की राजनीति एक बार फिर चुनावी रंग में रंग चुकी है। हर चुनावी सभा में, गली-मोहल्ले से लेकर सोशल मीडिया तक मुफ्त रेवडियों की घोषणाओं और वादों की बाढ़ आई हुई है। यह चुनावी मौसम पहले की तरह इस बार भी ‘रेवड़ी संस्कृति’ से सराबोर दिखाई देता है। महागठबंधन हो या एनडीए- दोनों गठबंधन एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में ऐसे-ऐसे वादे कर रहे हैं जो सुनने में आकर्षक लगते हैं, पर उनकी व्यवहारिकता और आर्थिक सम्भावना पर गंभीर प्रश्न उठते हैं। ये चुनावी वादें कैसे पूरे होंगे या जनता के साथ विश्वासघात होगा? हर दल मतदाताओं को लुभाने के लिए घोषणाओं की झड़ी लगा रहा है, लेकिन शायद ही किसी ने यह सोचा हो कि इन लोकलुभावन योजनाओं के लिए फंड कहां से आएगा, कैसे उनकी पूर्ति होगी और क्या यह राज्य की कमजोर आर्थिक स्थिति पर और बोझ नहीं बनेगा।बिहार का यह चुनाव इसलिए खास नहीं है क्योंकि इससे दो दशकों से राज्य का चेहरा रहे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का भविष्य तय होना है-यह खास इसलिये है क्योंकि दोनों गठबंधनों की तरफ से एक जैसी राजनीति चल रही है-लोकलुभावन घोषणाओं की। महागठबंधन ने दो दिन पहले ‘तेजस्वी -संकल्प’ घोषित किया। कांग्रेस, आरजेडी और दूसरे सहयोगी दलों ने बीते दिनों में जो चुनावी वादे किए हैं, उन्हें ही इसमें शामिल किया गया है। दूसरी ओर एनडीए के वादों की लिस्ट भी बेहद लंबी है। शुरुआत में नीतीश सरकार की तरफ से मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत 10 हजार रुपये, 125 यूनिट फ्री बिजली, एक करोड़ नौकरियों का वादा, महिलाओं को नौकरी में आरक्षण, बढ़ी पेंशन- नीतीश ने चुनावी अभियान इस तरह शुरू किया। महागठबंधन ने जवाब में 200 यूनिट फ्री बिजली, हर परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी, महिलाओं को हर महीने ढाई हजार, और भी बहुत कुछ देने का वादा किया है। दोनों की गठबंधन की आसमानी घोषणाएं लुभा रही है, जनता को गुमराह कर रही है, सीधे-सीधे रूप में यह वोटों को खरीदने की साजिश है। नीति आयोग के आंकड़े बताते हैं कि देश की जनसंख्या में बिहार का हिस्सा 9 प्रतिशत से ज्यादा है, पर जीडीपी में योगदान 2021-22 में घटकर 2.8 प्रतिशत रह गया। बिहार की प्रति व्यक्ति आय देश की औसत प्रति व्यक्ति आय का केवल 30 प्रतिशत है, जबकि बेरोजगारी ज्यादा है। 2022-23 में राज्य की जीडीपी की तुलना में ऋण का अनुपात 39.6 प्रतिशत था।

बिहार के सामने सबसे बड़ी समस्या है आय के साधन जुटाने की। कुल कमाई में उसका अपना टैक्स रेवेन्यू केवल 23 प्रतिशत है और केंद्र की तरफ से अनुदान का हिस्सा 21 प्रतिशत। जन सुराज का दावा है कि मुफ्त की योजनाओं को पूरा करने के लिए 33 हजार करोड़ चाहिए होंगे। इस आंकड़े को सच मान लें तो राज्य के कुल बजट में से रोजमर्रा के कामकाज व योजनाओं का खर्च निकालने के बाद करीब 40 हजार करोड़ रुपये बचते हैं। क्या मुफ्त रेवड़ियों की घोषणाओं के वादा इससे पूरे होंगे? एनडीए और महागठबंधन, दोनों ही एक-दूसरे की घोषणाओं पर सवाल उठा रहे हैं। हालांकि हकीकत में दोनों को बताना चाहिए कि वे किस तरह इन वादों को पूरा करेंगे। बेरोजगारों को भत्ता, महिलाओं को नकद सहायता, युवाओं को लैपटॉप, किसानों के लिए ऋणमाफी-इन घोषणाओं की बाढ़ ने लोकतंत्र को मजबूती देने के बजाय उसे लोकलुभावन जाल में फंसा दिया है। यह स्थिति केवल बिहार की नहीं, पूरे देश की राजनीति में एक नई प्रवृत्ति के रूप में उभर रही है, जहां सत्ता की कुर्सी तक पहुंचने का रास्ता जनता की विवेकशीलता से नहीं, बल्कि प्रलोभनों की मिठास से तय किया जा रहा है। यह प्रवृत्ति लोकतंत्र के लिए शुभ नहीं, क्योंकि यह मतदाता को उपभोक्ता में बदल देती है और राजनीति को नीति से भटकाकर लाभ की गणित में फंसा देती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कही गई ‘रेवड़ी संस्कृति’ की अवधारणा आज बिहार की राजनीति में पूर्णरूपेण साकार होती दिख रही है। मुफ्त बिजली, राशन, यात्रा या सहायता योजनाएं अब चुनावी घोषणाओं की अनिवार्य शर्त बन गई हैं। जनकल्याण का उद्देश्य पीछे छूट गया है, सामने है तो केवल वोटों की गिनती। इन घोषणाओं के माध्यम से मतदाता को प्रभावित करना एक तरह का सॉफ्ट करप्शन है, जहां खरीदी खुलकर नहीं होती, पर मानसिक रूप से मतदाता को बंधक बना लिया जाता है। यह प्रवृत्ति लोकतंत्र की आत्मा पर आघात है, क्योंकि यह नीतियों और सिद्धांतों को कमजोर करती है और राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का खेल बना देती है। लोकतंत्र तभी सशक्त होगा जब चुनाव नैतिक और नीति-सम्मत हों। चुनाव का अर्थ केवल जीत और हार नहीं, बल्कि समाज के चरित्र और दिशा का निर्धारण है। नैतिक राजनीति वही है जिसमें जनहित को सर्वोपरि माना जाए, न कि तत्कालिक लाभ को। यदि राजनीतिक दल अपने घोषणापत्र में केवल आकर्षक वादे ही भरते जाएं और उनके पीछे कोई आर्थिक या सामाजिक दृष्टि न हो, तो यह लोकतंत्र की आत्मा के साथ खिलवाड़ है। मतदाता को चाहिए कि वह ऐसी घोषणाओं से प्रभावित न हो, बल्कि यह देखे कि कौन-सी पार्टी या नेता दीर्घकालिक सुधार, रोजगार सृजन, शिक्षा, स्वास्थ्य और सुशासन की बात कर रहा है। लोकतंत्र उपहार नहीं, उत्तरदायित्व है, इसे समझना और निभाना नागरिक का धर्म है। वोट किसी के द्वारा दी जा रही मुफ्त सुविधाओं के लिए नहीं, बल्कि भविष्य की स्थिरता, सुशासन और सच्चे विकास के लिए दिया जाना चाहिए। मतदाता का विवेक ही लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति है। अगर जनता भावनाओं या लालच में निर्णय लेगी, तो राजनीति और शासन दोनों भ्रष्ट हो जाएंगे। इसी तरह दलों को भी आत्मसंयम रखना चाहिए और यह समझना चाहिए कि सत्ता की प्राप्ति साधन नहीं, सेवा का अवसर है। आज सबसे बड़ी जरूरत है कि चुनावी घोषणाओं पर एक नियंत्रण तंत्र बने, चुनाव आयोग और नीति आयोग मिलकर इस पर नियम तय करें कि कोई भी दल अपने घोषणापत्र में ऐसे वादे न करे जिनका कोई आर्थिक आधार न हो। मीडिया को भी केवल वादों को प्रचारित करने में नहीं, बल्कि उनकी समीक्षा करने में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। जनता के बीच मतदाता शिक्षण अभियान चलाए जाने चाहिए ताकि लोग यह समझ सकें कि वोट किसी प्रलोभन का प्रत्युत्तर नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है।

वैसे तो दोनों ही गठबंधन एक-दूसरे की घोषणाओं पर सवाल खड़े कर रहे हैं। भाजपा-जद(यू) गठबंधन तेजस्वी की छवि को एक गैर जिम्मेदार सपने बेचने वाले नेता के रूप में गढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। जाहिर है कि जब तक वादों को ठोस नीति में नहीं बदला जाएगा, वे केवल भाषणों की सजावट बने रहेंगे। महागठबंधन को चाहिए कि वह अपने घोषणापत्र को भावनात्मक अपील की बजाय आर्थिक व्यवहार्यता के साथ तैयार करे। यही रणनीति जनता में भरोसा जगाएगी और विपक्ष के हमलों को कमजोर करेगी। तेजस्वी यादव का करिश्मा, संवाद शैली और युवाओं से जुड़ाव उन्हें बिहार की राजनीति में एक बड़ा चेहरा बनाते हैं लेकिन उनकी पूरी चुनावी रणनीति धुआंधार वादों के इर्द-गिर्द घूम रही है। राजनीति में कोई भी वादा तब ताकत बनता है जब उसमें विश्वसनीयता, यथार्थता और क्रियान्वयन की संभावना हो।

लोकतंत्र की पवित्रता तभी बचेगी जब राजनीति नीति से संचालित होगी, जब सत्ता सेवा का माध्यम बनेगी और जब मतदाता अपने विवेक से निर्णय लेगा। बिहार जैसे प्रबुद्ध राज्य को चाहिए कि वह रेवड़ी संस्कृति से ऊपर उठकर विकास, रोजगार, शिक्षा, नैतिकता और सुशासन पर आधारित राजनीति का चयन करे। तभी लोकतंत्र अपने वास्तविक अर्थ में जीवित रहेगा और आने वाली पीढ़ियां गर्व से कह सकेंगी-“हमने वोट से अपना भविष्य खरीदा नहीं, बनाया है।”

प्रेरणा

तीन रास्ते, एक जीवन – मानव प्रयत्न की तीन दिशाएं और उनके अनिवार्य परिणाम

मनुष्य का जीवन एक सतत यात्रा है, जिसमें हर क्षण कोई न कोई निर्णय, कोई न कोई कर्म उसके भविष्य का निर्माण कर रहा होता है। यह जीवन अपने आप में एक प्रयोगशाला है, जहाँ प्रत्येक विचार, वाणी और कर्म का प्रभाव समय के प्रवाह में अंकित होता चला जाता है। कहा गया है — “कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।” अर्थात मनुष्य का अधिकार केवल कर्म करने में है, उसके फल पर नहीं। यही सिद्धांत मानव प्रयत्न की सबसे गूढ़ सच्चाई को प्रकट करता है।

प्रयत्न — यह शब्द केवल किसी बाह्य क्रिया का सूचक नहीं, बल्कि यह मनुष्य के आंतरिक संकल्प, निश्चय और दिशा का प्रतीक है। प्रयत्न का अर्थ है — विचारपूर्वक किया गया कर्म। यह प्रयत्न ही है जो मनुष्य को साधारण से असाधारण बनाता है, उसे पशुता से मनुष्यता और मनुष्यता से देवत्व तक की यात्रा करवाता है। किन्तु हर प्रयत्न समान नहीं होता। शास्त्रों में प्रयत्न के तीन भेद बताए गए हैं — शुभ, अशुभ और शुभाशुभ मिश्रित। ये तीनों भेद मनुष्य के जीवन की दिशा और परिणाम को निश्चित करते हैं।

शुभ प्रयत्न वह है जो सत्य, न्याय, करुणा और धर्म के अनुरूप किया जाए। जब मनुष्य का विचार निर्मल, वाणी मधुर और आचरण हितकारी होता है, तब वह शुभ कर्म करता है। ऐसे प्रयत्नों का परिणाम सुख, शांति और स्थायी संतोष के रूप में मिलता है। शुभ कर्म भले ही तुरंत फल न दें, पर उनका प्रभाव कालांतर में जीवन की दिशा बदल देता है। जैसे बीज बोने के बाद पौधे को अंकुरित होने में समय लगता है, वैसे ही शुभ कर्मों का फल धीरे-धीरे परंतु निश्चित रूप से मिलता है।

दूसरा मार्ग है अशुभ प्रयत्न का — जब व्यक्ति अपने स्वार्थ, लोभ, क्रोध या अहंकार के अधीन होकर कर्म करता है। अशुभ कर्मों में आत्मा की चेतना कुंद हो जाती है और विवेक का प्रकाश मंद पड़ जाता है। ऐसे कर्म तात्कालिक रूप से लाभदायक प्रतीत हो सकते हैं, परंतु दीर्घकाल में वे व्यक्ति को पीड़ा, भय, असफलता और मानसिक अस्थिरता की ओर ले जाते हैं। अशुभ कर्म का फल दुःख है, क्योंकि वह प्रकृति के उस नैतिक नियम का उल्लंघन करता है जो संतुलन और न्याय पर आधारित है।

तीसरा मार्ग है शुभाशुभ मिश्रित प्रयत्न का। यही मार्ग सबसे अधिक सामान्य है, क्योंकि अधिकांश मनुष्यों के कर्म न पूर्णतः शुभ होते हैं न पूर्णतः अशुभ। जीवन की परिस्थितियां, आवश्यकताएं, और अज्ञानता व्यक्ति को ऐसे कर्म करने पर विवश करती हैं जिनमें अच्छाई और बुराई दोनों का मिश्रण होता है। इन मिश्रित कर्मों के परिणाम भी मिश्रित ही होते हैं — कहीं सुख तो कहीं दुःख, कहीं सफलता तो कहीं विफलता। यही अनुभव जीवन का शिक्षक बनता है। शुभाशुभ मिश्रित कर्मों के माध्यम से मनुष्य धीरे-धीरे अपनी चेतना को परिष्कृत करता है और अनुभव से सीखते हुए शुभ मार्ग की ओर अग्रसर होता है।

प्रयत्न का संबंध केवल बाहरी कर्मों से नहीं बल्कि मन, वाणी और शरीर तीनों से है। मन में जो विचार उत्पन्न होते हैं, वही वाणी के रूप में व्यक्त होकर कर्म में परिणत होते हैं। इसलिए शुद्ध विचार ही शुद्ध कर्म का आधार हैं। यदि विचार में ईर्ष्या, भय या नकारात्मकता है तो कर्म चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, उसका परिणाम विकृत होगा। वहीं यदि विचार में प्रेम, निष्ठा और कर्तव्यभाव है तो साधारण कर्म भी महान बन जाता है।

मनुष्य अपने कर्म करने में स्वतंत्र है, परंतु फल भोग में परतंत्र। यह प्रकृति का अटल नियम है। व्यक्ति चाहे अपनी बुद्धि और शक्ति से प्रयास करे, किन्तु परिणाम उसके पूर्ण नियंत्रण में नहीं होता। फल का निर्धारण केवल उसके कर्म से नहीं, बल्कि अनेक कारकों से होता है — समय, परिस्थितियां, अन्य व्यक्तियों के कर्म, सामूहिक ऊर्जा, और सबसे बढ़कर ब्रह्मांड की न्याय व्यवस्था। इसी को “दैव” या “नियति” कहा गया है। यह दैव कर्म का ही विस्तारित रूप है जो पिछले जन्मों के संचित कर्मों के रूप में वर्तमान जीवन को प्रभावित करता है।

मानव जीवन का सार यह है कि प्रयत्न कभी व्यर्थ नहीं जाता। प्रत्येक प्रयास — चाहे वह शुभ हो या अशुभ — ब्रह्मांड में अपनी लहर छोड़ता है। यह लहर कभी न कभी लौटकर आती है, और उसी के रूप में व्यक्ति अपने कर्मों का फल भोगता है। जो व्यक्ति यह समझ लेता है कि उसका हर प्रयास ब्रह्मांड की न्याय व्यवस्था में दर्ज होता है, वह अपने कर्मों में सावधानी, ईमानदारी और निष्ठा लाता है।

गीता कहती है — “योगः कर्मसु कौशलम्।” अर्थात कर्म को कुशलता से करना ही योग है। जब व्यक्ति अपने कार्य को निष्काम भाव से करता है, तब वह परिणाम की चिंता से मुक्त होकर कर्म की पूर्णता में आनंद अनुभव करता है। यही स्थिति उसे मानसिक शांति और आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करती है।

मानव प्रयत्न की तीन दिशाएं – शुभ, अशुभ और मिश्रित – वास्तव में तीन सीढ़ियाँ हैं। पहली सीढ़ी अंधकार से ज्ञान की ओर, दूसरी स्वार्थ से कर्तव्य की ओर, और तीसरी सीमित चेतना से अनंत चेतना की ओर ले जाती है। जो व्यक्ति अपने जीवन में इन तीनों की अनुभूति करता हुआ निरंतर आत्म-संशोधन करता रहता है, वही अंततः “कर्तृत्व” से “साक्षित्व” की अवस्था में पहुँचता है।

इसलिए जीवन में हर क्षण, हर निर्णय और हर कर्म को एक साधना समझना चाहिए। न कोई कर्म छोटा है, न बड़ा; न कोई प्रयत्न व्यर्थ है, न असफल। हर प्रयत्न ईश्वर की उस अदृश्य योजना का हिस्सा है जो मनुष्य को अपने सर्वोच्च स्वरूप की ओर अग्रसर करती है। जो व्यक्ति यह समझ लेता है कि उसके हाथ में केवल कर्म है, फल नहीं — वही जीवन के तीनों रास्तों को पार कर अपने अस्तित्व के सच्चे अर्थ को प्राप्त कर लेता है।

बिहार के चुनाव पर नेपाली निगाहें

नेपाल के मेट्रो शहर वीरगंज में प्रोफेसर भाग्यनाथ प्रसाद गुप्ता मधेस राजनीति की सुपरिचित शख्सियत में से हैं। फोन पर पूछा, कि आम नेपाली किस नुक्ते-नज़र से बिहार चुनाव को देखता है? जवाब, एक नेपाली कहावत के रूप में पेश था- ‘अन्धो गाई र लंगडो गोरु’ अर्थात, ‘अंधी गाय और लंगड़ा बैल’। ऐसी कहावत का उपयोग तब किया जाता है, जब दो असमर्थ लोग मिलकर एक दूसरे की मदद करते हैं। इस कहावत के बहुआयामी निहितार्थ हैं। संसाधनों के मामलों में नेपाल सम्पूर्ण नहीं है। जहां उसे बिहार से मदद चाहिये, मिलती है। और जब सीमा पार बिहार में मुश्किलें होती हैं, नेपाल की जनता और व्यापारी, सेवाभाव से प्रस्तुत होते हैं।

1751 किलोमीटर लंबी भारतीय सीमा नेपाल से लगती है। इनमें भारत के पांच राज्यों की सीमाएं : बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल और सिक्किम बाड़बंदी के बग़ैर हैं। सबसे लंबी सीमा बिहार की 756 किलोमीटर, और सबसे छोटी सीमा सिक्किम की मात्र 99 किलोमीटर है। बिहार के सात सीमावर्ती ज़िले- पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण, सीतामढ़ी, मधुबनी, सुपौल, अररिया, किशनगंज हैं। नेपाल के हवाले से बहुत पुरानी कहावत इस्तेमाल होती रही, ‘बेटी-रोटी का सम्बन्ध।’ लेकिन, अब उसकी व्याख्या व्यापक है। बेटी-रोटी का सम्बन्ध केवल वोट बैंक तक महदूद नहीं है, विभिन्न दलों के जो प्रत्याशी खड़े होते हैं, उनके चुनावी खर्च का एक बड़ा हिस्सा नेपाल के उद्योग-व्यापार वाले वहन करते हैं। वैसे 21 विधानसभा क्षेत्र हैं, जो बिलकुल बॉर्डर लाइन पर हैं। दरअसल, बेटी-रोटी का कॉन्सेप्ट इन्हीं वजहों से शुरू होता है। लगभग हर तीसरे-चौथे परिवार की रिश्तेदारी नेपाल में दिखाई देती है। चुनांचे, जब नेपाल में चुनाव होता है, भारत वाले दोस्त, रिश्तेदार एक्टिव हो जाते हैं, उसी तरह जब भारत के इन पांच राज्यों में चुनाव होता है, नेपाल का सरोकार सामने आ जाता है।

लेकिन, चुनावी दायरा 21 विधानसभा क्षेत्रों तक सीमित नहीं है। ऐसे सात सीमावर्ती ज़िले बिहार के हैं, जिनके मुख्यालय की राजनीतिक गतिविधियों में नेपाल के लोगों की दिलचस्पी बनी रहती है। चुनावी सभा चाहे दरभंगा में हो, या कि मोतिहारी में, राहुल-मोदी अथवा अमित शाह को देखने नेपाल के लोग पहुंच ही जाते हैं। बिहार में इस तरह के 60 से 65 विधानसभा क्षेत्र हैं, जिनके भावी विधायकों, मंत्रियों, सांसदों के ‘गुड बुक’ में बने रहने की कवायद नेपाल में चलती रहती है।

दूसरा, मुस्लिम फैक्टर भी है, लगभग 80 फ़ीसद मुस्लिम आबादी तराई क्षेत्र में है, शेष 20 प्रतिशत मुसलमान मुख्यतः काठमांडू, गोरखा और पश्चिम नेपाल की पहाड़ियों तक सीमित हैं। लेकिन, जो बॉर्डर लाइन के नेपाली मुसलमान हैं, बताना अब ज़रूरी नहीं रह गया, कि बिहार में होने वाले चुनाव में वो किसकी जीत के ख्वाहिशमंद हैं। आप देख सकते हैं, चम्पारण के ढाका तथा सीमांचल के चार ज़िले पूर्णिया, कटिहार, अररिया और किशनगंज वाले अल्पसंख्यकों का राब्ता, नेपाल में एक्टिव मुसलमानों से रहता है।

बिहार-नेपाल व्यापार के लिए बारा, पर्सा, महोत्तरी, मोरंग, धनुषा, सर्लाही, रौतहट, सुनसरी और झापा ज़िलों से जुड़े 10 ट्रांज़िट पॉइंट शामिल हैं। मुख्य व्यापार में कृषि उत्पाद, दूध प्रसंस्करण, नॉन-वोवन बैग निर्माण, पशुधन के लिए खनिज और विटामिन मिश्रण वाला उत्पादन, औषधि, पेट्रोलियम, लिथियम आयन सौर बैटरी, कॉस्मेटिक्स से लेकर कपड़े और इलेक्ट्रॉनिक सामान तक शामिल हैं। लेकिन अब इसमें नया तड़का लगा है, शराब और शबाब का, जिसने एक नई क़िस्म की कनेक्टिविटी दोनों देशों में पैदा की है।

वर्ष 2016 में बिहार में शराबबंदी होने के बाद से, नेपाल के सीमावर्ती शहरों में अल्कोहल इंडस्ट्री और उसका खुदरा कारोबार ज़बरदस्त रूप से रफ़्तार पकड़ने लगा है। नेपाल के सीमावर्ती इलाकों में होटल और रेस्टोरेंट भारतीय विज़िटर्स की वजह से गुलजार हैं। बॉर्डर पार करके शराब पीने का शगल कुछ नया नहीं था। लेकिन इन दिनों आप बीरगंज से लेकर बिराटनगर, इटहरी और राजबिराज जैसे शहरों को जाकर देख आइये, चुनाव के समय शराब की मांग डबल हो गई है।

नौ वर्षों में नेपाल, बिहार वालों के लिए ‘लीकर डेस्टिनेशन’ बन चुका है। अब चूंकि, राजनीतिक कार्यकर्ताओं, उनके समर्थकों को ‘अतिरिक्त ऊर्जा’ चाहिए, तो नेपाली शहरों में शराब का धंधा और तेज़ हुआ है, विदेशों से शराब का आयात 12 फीसद बढ़ गया। नेपाल की शराब लॉबी चाहती है, कि बिहार में वैसी सरकार रहे, जो मद्यनिषेध जारी रखना चाहती हो। शराबबंदी से पहले बिहार में 3,142 करोड़ की सालाना आमदनी केवल शराब के ठेकों से सरकार को होती थी। अब आप मानकर चलें, विगत नौ वर्षों में लगभग 30 हज़ार करोड़ का राजस्व नेपाल सरक गया, मगर बिहार में शराबबंदी कामयाब नहीं हुई। बिराटनगर के व्यापारी बताते हैं, ‘बिहार सरकार द्वारा शराब पर बैन लगाने के बाद शराब की खपत बढ़ गई है। पहले हर दिन करीब सौ-डेढ़ सौ भारतीय शराब पीने के लिए हमारे इलाके में आते थे, अब यह संख्या अचानक से डबल हो गई। रेस्टोरेंट के अलावा, होटलों को भी फायदा हुआ है, क्योंकि कुछ भारतीय रात भर रुकते हैं। वे शराब पीकर बॉर्डर पार बिहार नहीं जा सकते।’

एक स्थानीय बिजनेसमैन बताते हैं, ‘अमीर भारतीय महंगे होटलों में रुकते हैं, जबकि कम आय वाले लोग सस्ते होटलों में जाते हैं।’ कोसी बैराज, कुनौली बाज़ार और सखाड़ा जैसे इलाकों में शराब ढूंढ रहे भारतीयों की भारी भीड़ देखी जा सकती है। वहीं दूसरी ओर, पटना, दरभंगा, मुजफ्फरपुर और समस्तीपुर जैसे बिहार के बड़े शहरों से भी लोग राजबिराज, बीरगंज और नेपाल के दूसरे सीमावर्ती शहरों में आते हैं।

अभियान

जीवन की बाधाओं से मुक्ति पाने के अद्भुत रहस्य : जानिए कैसे खुलेंगे आपके भाग्य के द्वार

मनुष्य के जीवन में सुख-दुःख, सफलता-असफलता, आशा-निराशा — ये सब समय के चक्र के साथ चलते रहते हैं। कभी लगता है कि सब कुछ हमारी इच्छा के अनुसार हो रहा है, पर कभी अचानक ऐसा होता है कि हर कार्य में रुकावट आने लगती है। चाहे कितनी भी मेहनत कर लें, परिणाम नहीं मिलता। घर में क्लेश बढ़ जाता है, व्यापार ठहर जाता है, नौकरी में पदोन्नति अटक जाती है, या फिर स्वास्थ्य और मन की स्थिति अस्थिर हो जाती है। यह सब केवल कर्मों का परिणाम नहीं होता, बल्कि ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति और जीवन की ऊर्जा पर पड़ने वाला सूक्ष्म प्रभाव भी इसका कारण होता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि जब जीवन की गति रुक जाए, जब हर ओर से निराशा छाने लगे, तब व्यक्ति को अपने भीतर की शक्ति और ईश्वर की कृपा दोनों को जागृत करना चाहिए। यह संभव है कुछ सरल किंतु अत्यंत प्रभावशाली उपायों से।

प्राचीन ग्रंथों और ऋषियों की परंपरा में कई ऐसे रहस्य बताए गए हैं जिनके प्रयोग से न केवल बाधाएं दूर होती हैं, बल्कि व्यक्ति का भाग्य भी नवोदय की तरह चमक उठता है। उदाहरण के लिए, जब आप प्रतिदिन प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान गणेश का स्मरण करते हैं और उन्हें दुर्वा घास अर्पित करते हैं, तो आप अपने जीवन से विघ्नों को समाप्त करने की दिशा में पहला कदम उठा लेते हैं। गणपति केवल विघ्नहर्ता ही नहीं, बल्कि बुद्धि और विवेक के दाता भी हैं। उनका नाम लेकर दिन की शुरुआत करना मन और मस्तिष्क को संयमित बनाता है और निर्णय क्षमता को प्रखर करता है।

इसके बाद यदि आप घर से बाहर निकलने से पहले तुलसी के तीन-चार पत्तों का सेवन करते हैं, तो यह न केवल शरीर को रोगमुक्त रखता है बल्कि आपकी आभा को पवित्र बनाता है। तुलसी में ऐसी सूक्ष्म आध्यात्मिक तरंगें होती हैं जो नकारात्मक ऊर्जा को आपके आसपास ठहरने नहीं देतीं। यह उपाय इतना सहज है कि इसे रोजाना जीवन में अपनाया जा सकता है और इसका प्रभाव गहरा और दीर्घकालिक होता है।

कई बार मनुष्य का कार्य बनते-बनते बिगड़ जाता है। इसे ‘विघ्न’ कहा गया है। इसे दूर करने के लिए एक अत्यंत उपयोगी उपाय बताया गया है— सुबह दीपक जलाकर उसमें दो फूल वाली अखंडित लौंग डालें और थोड़ी देर ध्यान लगाकर उसकी लौ को निहारें।

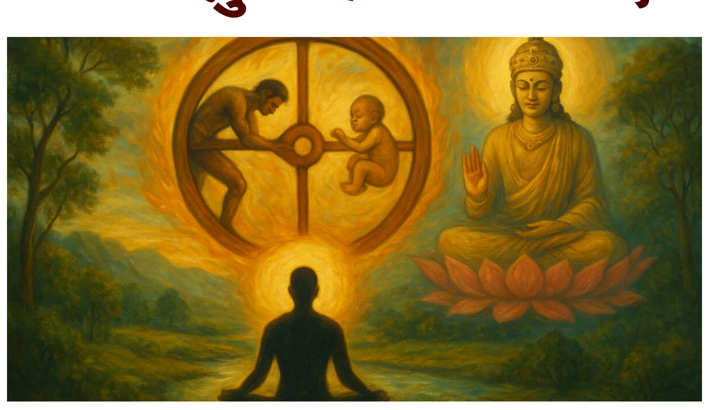

यह लौ न केवल भौतिक दीपक की रोशनी है बल्कि आपके भीतर के अंधकार को भी प्रकाशित करती है। ऐसा करने से दिन भर आपके कार्यों में कोई बाधा नहीं आती और ग्रहों का दुष्प्रभाव भी कम होता है।

यदि आप किसी महत्वपूर्ण कार्य, साक्षात्कार या सौदे के लिए जा रहे हैं, तो घर से निकलने से पहले एक निश्चित धनराशि — जिसमें कम से कम एक सिक्का अवश्य हो — अपने हाथ में लें और रास्ते में किसी भिक्षुक को दान करें। भिक्षुक के आशीर्वाद में वह अदृश्य शक्ति होती है जो आपके कार्य को सफल बनाती है। दान से मन निर्मल होता है और ईश्वर कृपा से मार्ग प्रशस्त होता है।

मां दुर्गा शक्ति का प्रतीक हैं। जब जीवन में कठिनाइयाँ अधिक बढ़ जाएँ, तब देवी की शरण में जाने से बाधाएँ स्वतः दूर हो जाती हैं। प्रातःकाल नौ लाल पुष्प अर्पित कर माता से प्रार्थना करें कि आपके कार्य बिना रुकावट के पूर्ण हों। इस उपाय से न केवल भौतिक बाधाएँ दूर होती हैं, बल्कि आत्मिक संतुलन भी प्राप्त होता है।

व्यापारियों के लिए एक विशिष्ट उपाय बताया गया है — यदि व्यापार बार-बार घाटे में जा रहा है या ग्राहक नहीं टिक रहे हैं, तो पीपल के वृक्ष पर सफेद कपड़े की ध्वजा बांधें। पीपल को देववृक्ष कहा गया है, जहाँ स्वयं विष्णु का वास होता है। सफेद ध्वजा स्थिरता और शुभता का प्रतीक है। यह उपाय व्यापार की रुकावटों को दूर कर निरंतर वृद्धि का मार्ग खोल देता है।

घर के मुख्य द्वार पर हल्दी और चावल को मिलाकर ‘ऊं’ और ‘स्वास्तिक’ का चिह्न बनाना अत्यंत शुभ माना गया है। यह प्रतीक न केवल धार्मिक रूप से पवित्र है, बल्कि यह आपके घर के चारों ओर एक सुरक्षा कवच भी बनाता है। इससे नकारात्मक शक्तियाँ अंदर प्रवेश नहीं कर पातीं और घर में लक्ष्मी और शांति का वास होता है।

यदि आप प्रतिदिन आदित्य हृदय स्तोत्र और राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करते हैं, तो सूर्यदेव की ऊर्जा आपके जीवन में प्रकाश भर देती है। आदित्य हृदय स्तोत्र से आत्मबल बढ़ता है और निराशा दूर होती है। राम रक्षा स्तोत्र एक दिव्य कवच है जो अदृश्य रूप से आपकी रक्षा करता है और आपके प्रयासों को सफलता तक पहुंचाता है।

किसी शुभ कार्य, परीक्षा या साक्षात्कार के लिए जाते समय दही, गुड़ या मिठाई का सेवन करना भी अत्यंत शुभ है। यह मनोवैज्ञानिक रूप से व्यक्ति को सकारात्मक बनाता है और शरीर को ऊर्जा देता है। यह परंपरा केवल आस्था नहीं, बल्कि व्यवहारिक विज्ञान पर भी आधारित है — जब मन प्रसन्न होता है, तो परिणाम स्वतः बेहतर होता है।

ज्योतिषीय दृष्टि से यदि जीवन में बार-बार रुकावटें उत्पन्न हो रही हैं, तो यह संकेत है कि आपकी कुंडली में कोई ग्रह अपनी दशा या गोचर में प्रतिकूल फल दे रहा है। ऐसे में किसी योग्य और अनुभवी ज्योतिषाचार्य से परामर्श करना आवश्यक है। लग्नेश, पंचमेश और भाग्येश ग्रहों की स्थिति देखकर उनके अनुकूल रत्न धारण करने से व्यक्ति के जीवन में शुभता बढ़ती है। परंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि रत्न हमेशा विधिवत प्राण प्रतिष्ठा के बाद ही धारण करें, तभी वह पूर्ण प्रभाव देता है।

इन सभी उपायों की सबसे बड़ी शक्ति है श्रद्धा। जब व्यक्ति दृढ़ विश्वास और समर्पण से इन उपायों को अपनाता है, तो ईश्वर स्वयं उसके मार्ग से विघ्न हटा देते हैं। जो मनुष्य अपने भीतर की शक्ति को पहचान लेता है, और अपने कर्म में आस्था जोड़ देता है, उसके लिए कोई भी बाधा स्थायी नहीं रहती। जीवन में रुकावटें आना स्वाभाविक है, परंतु उन्हें स्वीकार कर उनसे सीखना और सही दिशा में उपाय करना ही वास्तविक अध्यात्म है। जब व्यक्ति कर्म, विश्वास और प्रार्थना — इन तीनों का संतुलन साध लेता है, तब भाग्य स्वयं उसके चरणों में आ जाता है और जीवन का हर द्वार शुभता से खुल जाता है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 (2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002 and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

चुनाव के बीच मचा सियासी भूचाल: जदयू प्रत्याशी अनंत सिंह की गिरफ्तारी से बिहार की राजनीति में हलचल

(जीएनएस)। पटना। बिहार विधानसभा चुनाव के बीच शनिवार की देर रात राजनीति और अपराध के पुराने रिश्ते को फिर से सुर्खियों में ला देने वाली बड़ी खबर आई। पटना पुलिस ने मोकामा के बाहुबली और जदयू प्रत्याशी अनंत सिंह को दुलारचंद यादव हत्याकांड में मुख्य आरोपी बनाते हुए गिरफ्तार कर लिया। चुनावी मौसम में हुई इस गिरफ्तारी ने पूरे राज्य के सियासी तापमान को अचानक बढ़ा दिया है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, एसएसपी के नेतृत्व में गठित विशेष टीम ने बाढ़ के कारगिल मार्केट इलाके में गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी की और अनंत सिंह को उनके दो सहयोगियों – मणिकांत ठाकुर और रणजीत राम – के साथ हिरासत में ले लिया। तीनों को पूछताछ के बाद रविवार को अदालत में पेश किया जाएगा। गिरफ्तारी के दौरान भारी संख्या में पुलिस बल तैनात था ताकि किसी अप्रिय स्थिति से बचा जा सके।

यह मामला 30 अक्टूबर की उस घटना से जुड़ा है जिसने मोकामा की सियासी जमीन को हिला कर रख दिया था। उस दिन तारतर गांव में दो गुटों के बीच हुए हिंसक टकराव में क्षेत्र के वरिष्ठ नेता और पूर्व प्रत्याशी दुलारचंद यादव की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में गोली और धारदार हथियार के निशान की पुष्टि हुई थी। घटना के बाद इलाके में तनाव फैल गया था और पुलिस को भारी बल के साथ तैनात होना पड़ा था।

पुलिस की शुरुआती जांच में सामने आया कि हत्या के समय अनंत सिंह के समर्थक भी मौके पर मौजूद थे।

सीसीटीवी फुटेज, प्रत्यक्षदर्शियों के बयान और घटनास्थल से बरामद कारतूसों ने पुलिस को अनंत सिंह की भूमिका पर शक की दिशा दी। इसके बाद उन्हें मुख्य अभियुक्त बनाया गया।

सूत्रों के मुताबिक, गिरफ्तारी से पहले पुलिस ने लगातार दो दिनों तक बाढ़ और मोकामा में छापेमारी की थी।

दुलारचंद यादव मोकामा के प्रभावशाली नेताओं में से एक थे। वे तीन दशक से अधिक समय से सक्रिय राजनीति में थे और राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के पुराने सहयोगी माने जाते थे। हाल ही में वे जनसुराज पार्टी के उम्मीदवार के समर्थन में प्रचार अभियान चला रहे थे, जिससे मोकामा की सियासत और भी गर्म हो गई थी। बताया जाता है कि अनंत सिंह और दुलारचंद यादव के गुटों के बीच पिछले कई महीनों से राजनीतिक टकराव बढ़ता जा रहा था, जो अंततः इस खूनी संघर्ष में बदल गया।

पुलिस ने दावा किया है कि उसके पास पर्याप्त साक्ष्य मौजूद हैं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने बयान दिया कि "जांच के दौरान जो भी साक्ष्य सामने आए हैं, वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि यह हत्या पूर्वनियोजित थी। हमारे पास सीसीटीवी फुटेज, प्रत्यक्षदर्शियों के बयान और तकनीकी सबूत हैं जिनके आधार पर कार्रवाई की गई है।"

दूसरी ओर, जदयू खेमे में इस गिरफ्तारी से हलचल मच गई है। कुछ नेताओं ने इसे विपक्ष की साजिश बताया है, जबकि पार्टी के वरिष्ठ प्रवक्ताओं का कहना है कि "अगर किसी के खिलाफ सबूत हैं, तो कानून अपना काम करेगा। चुनाव के बीच इस तरह की घटनाएं दुर्भाग्यपूर्ण हैं, लेकिन किसी को कानून से ऊपर नहीं माना जा सकता।"

विपक्षी दलों ने भी इस घटना को लेकर सत्तारूढ़ दल पर निशाना साधा है। राजद नेताओं ने कहा कि "यह गिरफ्तारी देर से सही लेकिन स्वागत योग्य कदम है। मोकामा में वर्षों से अपराध और राजनीति का गठजोड़ चलता रहा है, अब वक्त है कि जनता इस व्यवस्था से मुक्त हो।"

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह गिरफ्तारी न केवल मोकामा सीट बल्कि पूरे बिहार चुनाव के माहौल को प्रभावित कर सकती है। अनंत सिंह की लोकप्रियता और विवादास्पद छवि दोनों ही कारक हैं जो मतदाताओं के रुझान को बदल सकते हैं। मोकामा की सीट अब राज्य की सबसे हॉट सीटों में बदल चुकी है, जहां पुलिस, प्रशासन और राजनीतिक दलों की नजरें टिकी हैं।

बिहार की राजनीति में यह पहला मौका नहीं जब चुनावी माहौल में किसी बड़े नेता या प्रत्याशी की गिरफ्तारी हुई हो, लेकिन इस बार मामला संवेदनशील इसलिए है क्योंकि अनंत सिंह को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के करीबी नेताओं का समर्थन प्राप्त बताया जाता रहा है। ऐसे में यह गिरफ्तारी गठबंधन के भीतर भी तनाव की स्थिति पैदा कर सकती है। बिहार में हर चुनाव में अपराध और राजनीति के गठजोड़ की चर्चा होती है, परंतु इस बार यह विषय पहले से कहीं अधिक गहराई से सामने आया है। चुनाव के इस संवेदनशील दौर में यह गिरफ्तारी न केवल राजनीतिक समीकरणों को बदल सकती है बल्कि यह भी तय कर सकती है कि जनता अपराध के साये में राजनीति को कितना स्वीकार करती है।

मोकामा में इस समय सन्नाटा और तनाव दोनों व्याप्त हैं, जबकि पूरे राज्य में यह चर्चा है कि क्या यह गिरफ्तारी कानून का पालन है या चुनावी रणनीति का हिस्सा। जवाब जो भी हो, लेकिन इतना तय है कि बिहार की सियासत एक बार फिर अपने पुराने और विवादित रास्ते पर लौट आई है, जहां लोकतंत्र और अपराध की रेखाएं एक बार फिर धुंधली पड़ने लगी हैं।

उत्कृष्ट टिकट जांच कार्य के लिए सम्मान

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा सभी वैध यात्रियों को सुगम, आरामदायक यात्रा और बेहतर सेवाएं सुनिश्चित करने के उद्देश्य से वडोदरा मंडल के मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों, पैसेंजर ट्रेनों तथा हॉलिडे स्पेशल ट्रेनों में बिना टिकट/अनियमित यात्रियों पर अंकुश लगाने हेतु निरंतर गहन टिकट जांच चलाए जा रहे हैं।

वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार टिकट जांच दलों द्वारा विभिन्न ट्रेनों एवं स्टेशनों पर टिकट जांच दवारा अक्टूबर माह में 8 टिकट जाँच कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री नरेन्द्र कुमार द्वारा प्रशंसा पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

श्री सक्सेना ने बताया कि मंडल के वाणिज्य विभाग के टिकट चेकिंग स्टाफ श्री डी वी चौधरी, श्री पी के झा, श्री सुनिल पंडीर,श्री शैलेन्द्र क्षत्रिय , श्री एच जे लोटिया, श्री पी एस चौहान, श्रीमती भुमिका पटेल एवं श्री रतिलाल वसावा को अक्टूबर माह में टिकट चेकिंग में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। श्रीमती भुमिका पटेल ने टिकट चेकिंग में अनियमित मामले की जांच कर एक दिन की सबसे अधिक आय अंकित की।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, वडोदरा ने सभी कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट कार्य एवं समर्पण के लिए सराहा और कहा कि यात्रियों को बेहतर एवं पारदर्शी सेवा प्रदान करने के लिए ऐसे प्रयास निरंतर जारी रहेंगे।

बेमौसम बारिश से कृषि फसलों को हुए नुकसान पर शीघ्र ही राहत पैकेज घोषित करेगी राज्य सरकार

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने एक्स पर पोस्ट कर दी जानकारी

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा है कि राज्य के विभिन्न जिलों में पिछले कुछ दिनों में हुई बेमौसम बारिश के कारण किसानों की खड़ी फसलों को व्यापक नुकसान हुआ है। इस अप्रत्याशित प्राकृतिक आपदा के समय में राज्य सरकार पूरी संवेदना के साथ किसानों के साथ खड़ी है।

श्री पटेल ने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर पोस्ट कर कहा, "राज्य के मंत्रियों ने विभिन्न प्रभावित क्षेत्रों का प्रत्यक्ष दौरा कर किसानों की स्थिति जानी है। प्रशासन द्वारा फसल को हुए नुकसान की समीक्षा तथा सर्वेक्षण का कार्य अत्यंत तेजी से शुरू किया जा रहा है। मैं इस संदर्भ में निरंतर मंत्रियों एवं अधिकारियों के साथ समन्वय में हूँ।"

उन्होंने कहा कि धरतीपुत्रों के हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर राज्य सरकार किसानों को इस नुकसान में सहायक होने के लिए शीघ्र ही राहत-सहायता पैकेज घोषित करेगी।

ग्रो आईपीओ को लेकर उत्साह चरम पर, 4 नवंबर से खुलेगा सब्सक्रिप्शन—कंपनी ने तय किया 95-100 का प्राइस बैंड, 61,700 करोड़ की वैल्यूएशन का लक्ष्य

(जीएनएस)। नई दिल्ली। शेयर बाजार में निवेश करने वालों के लिए नवंबर का पहला हफ्ता बेहद अहम साबित होने जा रहा है। देश के लोकप्रिय ऑनलाइन इन्वेस्टमेंट प्लेटफॉर्म Groww की पैरेंट कंपनी बिलियनब्रेन्स गैराज वेंचर्स लिमिटेड ने अपने बहुप्रतीक्षित आईपीओ (Initial Public Offering) की पूरी डिटेल्स जारी कर दी हैं। कंपनी ने अपने आईपीओ के लिए 95 से 100 प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया है और बाजार से लगभग 6,632 करोड़ रुपये जुटाने का लक्ष्य रखा है।

यह आईपीओ 4 नवंबर को आम निवेशकों के लिए खुलेगा और 7 नवंबर तक सब्सक्रिप्शन के लिए उपलब्ध रहेगा। वहीं, एंकर निवेशकों के लिए बुक 3 नवंबर को खुलेगी। निवेशकों में पहले से ही इस इश्यू को लेकर जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है। मार्केट विश्लेषकों के मुताबिक, ग्रो के आईपीओ का ग्रे मार्केट प्रीमियम (GMP) फिलहाल 11 पर चल रहा है, जो इसके ऊपरी प्राइस बैंड 100 के मुकाबले लगभग 11% प्रीमियम दर्शाता है। इसका मतलब यह है कि ग्रे मार्केट में ग्रो का शेयर 111 के आसपास ट्रेड कर रहा है, जो संकेत देता है कि लिस्टिंग के दिन निवेशकों को अच्छा मुनाफा मिल सकता है। हालांकि, विशेषज्ञों का कहना है कि जीएमपी में उतार-चढ़ाव लिस्टिंग तक बना रहेगा। कंपनी ने बताया कि आईपीओ में 55.72 करोड़ शेयर मौजूदा शेयरधारकों द्वारा ऑफर फॉर सेल (OFS) के तहत बेचे जाएंगे, जबकि 1,060 करोड़ रुपये के नए शेयर जारी किए जाएंगे। इस पूंजी का इस्तेमाल कंपनी अपने ब्रांड को और मजबूत करने, नई तकनीकी परियोजनाओं में निवेश, और नए वित्तीय उत्पादों की शुरुआत के लिए करेगी। ग्रो के को-फाउंडर हर्ष जैन ने कहा कि कंपनी लगातार तकनीकी नवाचार पर ध्यान केंद्रित करती रही है और आने वाले समय में इसे और गति देने की

दिल्ली दंगों के आरोपियों की जमानत पर आज फिर होगी सुनवाई, सुप्रीम कोर्ट में उमर खालिद और शरजील इमाम की किस्मत पर टिकी निगाहें

(जीएनएस)। नई दिल्ली। 2020 के दिल्ली दंगों की साजिश से जुड़े बहुचर्चित मामले में आज एक बार फिर देश की सर्वोच्च अदालत में हलचल मचने वाली है। सुप्रीम कोर्ट सोमवार को छात्र नेताओं उमर खालिद, शरजील इमाम, गुलफिशा फातिमा और अन्य आरोपियों की जमानत याचिकाओं पर फिर से सुनवाई शुरू करेगा। इन सभी पर गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम यानी यूएपीए के तहत गंभीर आरोप हैं, और यह सुनवाई इस बात पर तय करेगी कि उन्हें जेल से राहत मिलेगी या नहीं।

सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर प्रकाशित कॉजलिस्ट के अनुसार, जस्टिस अरविंद कुमार और एनवी अंजारिया की पीठ 3 नवंबर को सह-आरोपी मीरान हैदर, मोहम्मद सलीम खान और शिफा उर रहमान की याचिकाओं के साथ-साथ दिल्ली पुलिस की दलीलें भी सुनेगी। यह सुनवाई लंबे समय से चल रहे इस मामले में अहम मोड़ मानी जा रही है।

पिछली सुनवाई में उमर खालिद की ओर से सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल ने तीखी दलीलें दी थीं। उन्होंने कहा था कि प्रॉसिक्यूशन जानबूझकर ट्रायल में देरी कर रहा है और अब वह इसका ठीकरा आरोपी पर फोड़ने की कोशिश कर रहा है। सिब्बल ने कहा था कि दिल्ली में हुए दंगों से जुड़ी 751 एफआईआर में से केवल एक में उमर खालिद का नाम है, जबकि दंगे के दौरान वह दिल्ली में मौजूद भी नहीं थे। उन्होंने अदालत को यह भी बताया कि खालिद के पास से कोई आपत्तिजनक या अपराध सिद्ध करने वाला सामान नहीं मिला और उनके किसी भी कथित कार्य को यूएपीए के तहत "आतंकवादी गतिविधि" नहीं कहा जा सकता।

सिब्बल ने सह-आरोपियों आसिफ इकबाल तन्हा, देवांगना कलिता और नताशा नरवाल के उदाहरण दिए, जिन्हें पहले ही जमानत मिल चुकी है। उनका कहना था कि अगर उन्हीं सबूतों और गवाहों के आधार पर उन्हें बेल मिल सकती है, तो उमर खालिद को भी न्यायसंगत राहत मिलनी चाहिए।

दूसरी ओर, शरजील इमाम के वकील सिद्धार्थ दवे ने अदालत को बताया कि जांच एजेंसी ने तीन साल से अधिक समय बीत जाने के बावजूद जांच पूरी नहीं की है और बार-बार सप्लीमेंट्री चार्जशीट दाखिल कर रही है। उन्होंने यह भी कहा कि शरजील इमाम को 25 जनवरी 2020 को गिरफ्तार किया गया था, जबकि दंगे फरवरी में हुए थे। ऐसे में यह सवाल उठता है कि जो व्यक्ति एक महीने पहले से जेल में है, वह दंगों में कैसे शामिल हो सकता है? दवे ने कहा कि उनके मुवक्किल के भाषण दिसंबर 2019 में दिए गए थे, यानी दंगों से दो महीने पहले, और उन भाषणों में हिंसा या उकसावे का कोई उल्लेख नहीं था। सुप्रीम कोर्ट के सवाल पर दवे ने स्पष्ट किया कि शरजील ने केवल नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के खिलाफ शांतिपूर्ण चक्का जाम की अपील की थी, न कि किसी हिंसा का आह्वान किया था। इसी तरह गुलफिशा फातिमा की ओर से सीनियर एडवोकेट अभिषेक मनु सिंघवी ने तर्क दिया कि उन पर सिर्फ विरोध स्थल बनाने का आरोप है, लेकिन उस स्थल पर किसी भी तरह की हिंसा नहीं हुई। उन्होंने कहा कि न तो मौखिक सबूत हैं और न ही कोई दस्तावेजी प्रमाण जो उन्हें साजिश से जोड़ते हों।

दिल्ली हाईकोर्ट पहले ही उमर खालिद, शरजील इमाम और अन्य की जमानत अर्जी खारिज कर चुका है। अब सुप्रीम कोर्ट में होने वाली यह सुनवाई न केवल इन छात्रों के भविष्य का फैसला करेगी, बल्कि देश में यूएपीए कानून के दुरुपयोग और संवैधानिक स्वतंत्रता के दायरे पर भी गहरा प्रभाव डाल सकती है। अदालत की अगली कार्रवाई पर पूरे देश की निगाहें टिकी हैं कि क्या अब इन आरोपियों को जेल मिलेगी या बेल।

भारत और बहरीन के रिश्तों में नई ऊर्जा, जयशंकर और अब्दुल लतीफ करेंगे उच्च संयुक्त आयोग की बैठक — 54 साल पुराने रिश्ते में नया अध्याय

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत और बहरीन के बीच 54 वर्षों से चली आ रही कूटनीतिक मित्रता एक बार फिर नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ने जा रही है। बहरीन के विदेश मंत्री अब्दुल लतीफ बिन राशिद अलजयानी रविवार को भारत पहुंचे, जहां वे विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर के साथ भारत–बहरीन उच्च संयुक्त आयोग की पांचवीं बैठक की सह-अध्यक्षता करेंगे। यह बैठक न केवल दोनों देशों के गहरे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रिश्तों को फिर से पुष्ट करेगी, बल्कि व्यापार, ऊर्जा, शिक्षा, तकनीक और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में सहयोग के नए अवसर भी खोलेगी।

भारत और बहरीन के बीच राजनयिक संबंधों की शुरुआत वर्ष 1971 में हुई थी। लेकिन दोनों देशों के आपसी संपर्क इससे कहीं पहले के हैं — समुद्री व्यापार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और प्रवासी भारतीयों की उपस्थिति ने इन संबंधों को समय के साथ और मजबूत किया है। बहरीन की खाड़ी में बसे भारतीयों का समुदाय वहां की अर्थव्यवस्था का अहम हिस्सा है और दोनों देशों के बीच एक मजबूत मानवीय सेतु का कार्य करता है।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, "बहरीन साम्राज्य के विदेश मंत्री अब्दुल लतीफ बिन राशिद अलजयानी का भारत में स्वागत है। वे विदेश मंत्री एस. जयशंकर के साथ पांचवीं भारत–बहरीन उच्च संयुक्त आयोग बैठक की सह-अध्यक्षता करेंगे। यह यात्रा हमारे संबंधों में सकारात्मक गति को आगे बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण अवसर है।"

सूत्रों के अनुसार, बैठक के एजेंडे में व्यापार और निवेश को और गति देने, ऊर्जा क्षेत्र में संयुक्त परियोजनाओं की समीक्षा करने और नए आर्थिक साझेदारी मॉडल विकसित करने पर चर्चा होगी। खास तौर पर डिजिटल प्रौद्योगिकी, फिनटेक (वित्तीय तकनीक), नवीकरणीय ऊर्जा, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सहयोग के नए रास्ते तलाशे जाएंगे।

भारत और बहरीन के बीच वर्तमान में द्विपक्षीय व्यापार कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में फैला हुआ है — जिसमें पेट्रोलियम उत्पाद, लोहा और इस्पात, मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, रासायनिक उत्पाद और खाद्य पदार्थ शामिल हैं। पिछले कुछ वर्षों में दोनों देशों के बीच व्यापारिक लेनदेन में लगातार वृद्धि देखी गई है, जो 2024–25 के वित्तीय वर्ष में रिकॉर्ड स्तर तक पहुंच गया।

बहरीन, खाड़ी क्षेत्र में भारत का एक रणनीतिक साझेदार है। यह देश न केवल ऊर्जा सुरक्षा की दृष्टि से अहम है, बल्कि भारतीय प्रवासी समुदाय के लिए भी एक सुरक्षित और सम्मानजनक गंतव्य माना जाता है। करीब साढ़े तीन लाख भारतीय नागरिक बहरीन में रह रहे हैं, जो देश के श्रमबल, उद्योग और सेवा क्षेत्रों में सक्रिय योगदान दे रहे हैं।

विदेश नीति विशेषज्ञों का कहना है कि इस बैठक से भारत–बहरीन संबंधों में एक "क्वांटम जंप" देखने को मिल सकता है। यह बैठक दोनों देशों के बीच न केवल आर्थिक साझेदारी बल्कि रणनीतिक और सांस्कृतिक सहयोग को भी नया आयाम देगी।

डॉ. एस. जयशंकर और अब्दुल लतीफ बिन राशिद अलजयानी की बैठक से पहले दोनों देशों के अधिकारियों ने व्यापार, ऊर्जा और सुरक्षा मामलों पर तकनीकी चर्चाएं भी कीं। उम्मीद की जा रही है कि इस बैठक से कई महत्वपूर्ण समझौते और संयुक्त घोषणाएं सामने आएंगी, जो भारत और बहरीन के रिश्तों को "साझेदारी के नए युग" में प्रवेश दिलाएंगी।

भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में एकता नगर में जनजातीय गौरव वर्ष उत्सव तथा भारत पर्व का भव्य

▸▸ जनजातीय गौरव वर्ष उत्सव जनजाति समाज के गौरव को उजागर करने वाला उत्सव है : आदिजाति विकास राज्य मंत्री श्री पी. सी. बरंडा

▸▸ विषय विशेषज्ञों द्वारा भगवान बिरसा मुंडा के जीवन चरित्र एवं संघर्ष गाथा तथा अमूल्य योगदान से अवगत कराया गया

(जीएनएस)। गांधीनगर : भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में जनजातीय गौरव वर्ष उत्सव के हिस्से के रूप में भगवान बिरसा मुंडा के जीवन एवं योगदान विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद कार्यक्रम उद्घाटन सत्र का टैंट सिटी-2 एकता नगर से प्रारंभ कराते हुए गुजरात सरकार के आदिजाति विकास राज्य मंत्री श्री पी. सी. बरंडा ने कहा कि जनजातीय समाज के गौरव को दर्शाने का यह उत्सव है। जल, जंगल व जमीन के साथ जनजातियों की अस्मिता व सर्वांगीण विकास के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2021 से इस उत्सव की घोषणा की थी। वर्ष 2047 तक आदिजाति विकास को सुनिश्चित कर भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए प्रधानमंत्री ने रोड मैप तैयार किया है। विकसित भारत की बात जब आती है, तब गुजरात राज्य देश का रोल मॉडल बना है। आदिजाति समुदाय को शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य, रोजगार, कृषि, पशुपालन के साथ सभी क्षेत्रों में केन्द्र-राज्य सरकार ने परिणामदायी प्रयत्न किए हैं।

राष्ट्रीय स्तर के इस परिसंवाद के उद्घाटन सत्र के दौरान अध्यापकों-विद्यार्थियों की उपस्थिति में देश के विभिन राज्यों के विषय विशेषज्ञों ने भगवान बिरसा मुंडा के जीवन कार्य पर आधारित व्याख्यानों एवं शोध पत्रों की प्रस्तुति की तथा विचार-विमर्श किया। इसके अलावा, प्राध्यापक-शिक्षकों को कार्यक्रम में सहभागी होने के लिए प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

इस अवसर पर उदयपुर के सांसद श्री मन्नालाल रावत, भरूच के सांसद श्री मनसुखभाई वसावा, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री भीमसिंह तडवी, नांदोद की विधायक डॉ. दर्शनाबेन देशमुख,

आदिजाति विकास विभाग की प्रधान सचिव श्रीमती शाहमीना हुसैन, सेवानिवृत्त चुनाव आयुक्त श्री संजय प्रसाद, ओडिशा के सेवानिवृत्त टीआरआई निदेशक श्री ए. बी. ओटा, झारखंड-राँची आदिवासी कल्याण अनुसंधान संस्थान के श्री राजेन्द्र कुमार, बिरसा मुंडा ट्राइबल यूनिवर्सिटी के उप कुलपति डॉ. मधुकर पाडवी, आदिजाति विकास निदेशक श्री आशिष कुमार सहित उच्चाधिकारी, विषय विशेषज्ञ, अध्यापक, शिक्षक, विद्यार्थी एवं नागरिक उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि 1 से 15 नवंबर, 2025 के दौरान एकता नगर में भगवान बिरसा मुंडा के जीवन चरित्र तथा संघर्ष गाथा प्रदर्शनी के माध्यम से उनके अमूल्य योगदान से विभिन्न राज्यों के पर्यटकों को अवगत कराया जाएगा।

इस अवसर पर जनजातीय गौरव वर्ष तथा भारत पर्व के उपलक्ष्य में आदिजाति परंपरा पिठोरा-वारली चित्रकला, आदिजाति कला संस्कृतिक की प्रदर्शनी, हस्तकला कृति की प्रदर्शनी, आदिवासी परंपरागत खाद्य उत्पादों, वाद्यों, वनौषधीय चिकित्सा प्राणियों की प्रदर्शनी एवं बिक्री की जाएगी। समग्र देश में बसने वाले आदिवासी समुदायों की विविधतापूर्ण सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक विरासत जग विख्यात है। आदिवासियों की सामाजिक-सांस्कृतक विरासत को उजागर करने के लिए प्रतिदिन शाम को भव्य आदिवासी सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होने वाले हैं। गुजरात के विख्यात आदिवासी नृत्यों के माध्यम से आदिवासी सांस्कृतिक विरासत की प्रतीति कराई जाएगी।

15 नवंबर, 2025 यानी भगवान बिरसा मुंडा का जन्म दिवस, जिसे जनजातीय गौरव दिवस के रूप में समग्र राष्ट्र में मनाया जाता है। इस उपलक्ष्य में विशाल जन समूह तथा गरिमामय महानुभावों की उपस्थिति में 15 नवंबर तक विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। इस कार्यक्रम में गुजरात के 151 स्वतंत्रता सेनानियों के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान तथा भगवान बिरसा मुंडा के यशस्वी जीवन चरित्र का वर्णन करने वाली पुस्तकों का महानुभावों के करकमलों से अनावरण किया जाएगा।

भारत की विकास यात्रा पर मंडरा रहा वैश्विक खतरा: मॉर्गन स्टैनली के मुख्य अर्थशास्त्री रिधम देसाई ने जताई चिंता

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत की अर्थव्यवस्था इस समय अपनी सबसे मजबूत स्थिति में दिखाई दे रही है। न केवल घरेलू निवेश में वृद्धि हो रही है बल्कि कंपनियों और परिवारों की बैलेंस शीट भी स्वस्थ है। सुधारों की दिशा में केंद्र सरकार के कदमों ने विकास की रफ्तार को और तेज किया है। लेकिन, इसी मजबूत नींव के बीच एक गंभीर चेतावनी आई है — मॉर्गन स्टैनली के मैनेजिंग डायरेक्टर और चीफ इंडिया इक्विटी स्ट्रैटेजिस्ट रिधम देसाई ने कहा है कि भारत की अर्थव्यवस्था को सबसे बड़ा खतरा भारत के भीतर नहीं, बल्कि सीमाओं के बाहर से है। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि "भारत के लिए बहुत कुछ गलत हो सकता है, और इनमें से ज्यादातर चीजें हमारे नियंत्रण के बाहर हैं।" देसाई ने बिजनेस स्टैंडर्ड बीएफएसआई समिट में बोलते हुए कहा कि भारत के भीतर आर्थिक स्थिति बेहद मजबूत है। कॉर्पोरेट सेक्टर का कर्ज घटा है, निवेश माहौल सुधरा है और घरेलू खपत में निरंतर वृद्धि हो रही है। लेकिन वैश्विक परिदृश्य पर नजर डालें तो तस्वीर चिंता बढ़ाने वाली है। उनका कहना है कि "दुनिया रिकॉर्ड स्तर के कर्ज, घटती जनसंख्या और अनिश्चित भू-राजनीतिक तनावों का सामना कर रही है। यह तीनों मिलकर वैश्विक अस्थिरता को बढ़ा रहे हैं, जिसका सीधा असर भारत जैसे विकासशील देशों पर पड़ सकता है।"

रिधम देसाई ने इस बात पर भी जोर दिया कि भारत की सबसे बड़ी ताकत उसकी युवा आबादी है। उन्होंने कहा, "जब पूरी दुनिया बूढ़ी हो रही है, भारत जवान है। हमारे पास श्रमशक्ति है, उपभोग क्षमता है और मांग पैदा करने की शक्ति है। रोबोट उत्पादन कर सकते हैं, लेकिन वे उपभोक्ता नहीं बन सकते। दुनिया को उपभोक्ता भारत में मिलेंगे — यही हमारी सबसे बड़ी आर्थिक ढाल है।"

उन्होंने यह भी कहा कि आने वाले दो दशकों में भारत वैश्विक विकास में 20 प्रतिशत हिस्सेदारी देगा। "अगले 10 से 20 सालों में भारत वैश्विक विकास का पांचवां हिस्सा बनेगा। जो कंपनियां अभी भारत में नहीं हैं, वे भविष्य में पछताएंगी," देसाई ने कहा। लेकिन देसाई ने इस आशावाद के बीच एक गहरी चिंता भी जताई। उन्होंने चेतावनी दी कि भारत का भौगोलिक परिवेश चुनौतीपूर्ण है। "हम अपने पड़ोसियों को नहीं चुन सकते, लेकिन हमारे अधिकतर पड़ोसी या तो आर्थिक रूप से अस्थिर हैं या राजनीतिक संकट में हैं। यह स्थिति हमेशा भारत के लिए किसी न किसी रूप में खतरा बन सकती है," उन्होंने कहा।

घरेलू मोर्चे पर उन्होंने कृषि क्षेत्र को भारत की सबसे बड़ी अधूरी कहानी बताया। "भारत के पास करीब 20 करोड़ किसान हैं, जिनकी उत्पादकता दुनिया के औसत से बहुत नीचे है। अगर हम चीन जैसी उत्पादकता हासिल कर लें तो हमारी कृषि अर्थव्यवस्था 2 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच सकती है। हमारे पास 35 करोड़ एकड़ कृषि भूमि है — यह दुनिया के किसी भी बड़े देश की तुलना में सबसे अधिक उपजाऊ क्षेत्र है। हम चाहें तो आधी दुनिया को अनाज खिला सकते हैं," उन्होंने कहा। देसाई ने जोर दिया कि कृषि सुधारों को फिर से जीवित करने की जरूरत है, ताकि किसानों को गरीबी के दायरे से बाहर निकाला जा सके। उन्होंने कहा कि अगर किसानों को विकास की मुख्यधारा में नहीं लाया गया तो बाकी आबादी के मुकाबले उनका पिछड़ना सामाजिक असंतुलन का कारण बन सकता है।

अपने संबोधन के अंत में देसाई ने कहा कि भारत की मैक्रोइकॉनॉमिक स्थिति मजबूत और लचीली है, लेकिन वैश्विक जोखिम इसे झकझोर सकते हैं। "भारत तैयार है, लेकिन दुनिया कमजोर हो रही है। कर्ज के बोझ और घटती आबादी की दिशा में जा रही दुनिया किसी बड़े वित्तीय संकट को जन्म दे सकती है, जिसका असर भारत पर भी पड़ेगा," उन्होंने कहा। इस तरह, देसाई का संदेश साफ था — भारत को अपने घरेलू सुधारों की गति बनाए रखनी होगी, लेकिन साथ ही उसे वैश्विक हलचलों पर पैनी नजर रखनी होगी, क्योंकि आने वाले समय में भारत की मजबूती का असली इम्तिहान सीमाओं के बाहर से होगा।

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में देश को 1 लाख करोड़ की सौगात, प्रधानमंत्री मोदी ने किया ESTIC 2025 का शुभारंभ

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत के विज्ञान और तकनीक के इतिहास में सोमवार का दिन एक नया अध्याय जोड़ गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित “उभरते विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन” (Emerging Science, Technology & Innovation Conference – ESTIC 2025) का भव्य उद्घाटन किया और इस अवसर पर देश को 1 लाख करोड़ रुपये के अनुसंधान, विकास और नवाचार (RDI) स्कीम फंड की ऐतिहासिक सौगात दी। इस फंड का उद्देश्य भारत में निजी क्षेत्र के अनुसंधान और विकास (R&D) इकोसिस्टम को मजबूती देना और देश को विज्ञान एवं तकनीकी नवाचार के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की दिशा में अग्रसर करना है।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि “भारत अब केवल विज्ञान का उपभोक्ता नहीं, बल्कि नवाचार का निर्माता बन चुका है। यह सदी भारत की विज्ञान-सदी है, और आज का दिन उस दिशा में निर्णायक कदम है।” प्रधानमंत्री के संबोधन के दौरान सभागार में उपस्थित वैज्ञानिकों, उद्योगपतियों, शिक्षाविदों और युवा शोधकर्ताओं ने तालियों की गड़गड़ाहट से इस ऐतिहासिक घोषणा का स्वागत किया।

तीन हजार से अधिक प्रतिभागियों की उपस्थिति में वैज्ञानिक मंथन

ESTIC 2025 का आयोजन 3 से 5 नवंबर 2025 तक भारत मंडपम में किया जा रहा है। इसमें देश और विदेश से 3,000 से अधिक प्रतिभागी, जिनमें नोबेल पुरस्कार विजेता, शीर्ष वैज्ञानिक, शोध संस्थान, उद्योग जगत के प्रतिनिधि, नीति निर्माता और युवा नवप्रवर्तक शामिल हैं, हिस्सा ले रहे हैं। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य विज्ञान और उद्योग के बीच समन्वय बढ़ाकर भारत को “वैश्विक इनोवेशन हब” बनाना है।

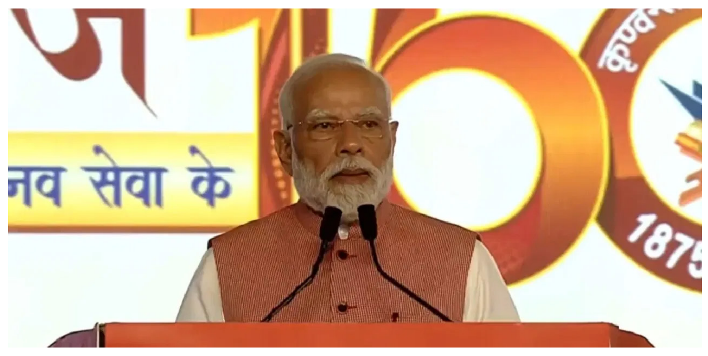

सम्मेलन में 11 प्रमुख विषयगत क्षेत्रों पर विचार-विमर्श किया जा रहा है — उन्नत सामग्री और मैन्युफैक्चरिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), बायो-मैन्युफैक्चरिंग, नीली अर्थव्यवस्था (Blue Economy), डिजिटल कम्युनिकेशन, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सेमीकंडक्टर निर्माण, उभरती कृषि तकनीक, ऊर्जा, पर्यावरण एवं जलवायु, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा प्रौद्योगिकी, क्वांटम विज्ञान और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी।

RDI स्कीम से उद्योग और अनुसंधान को नई ऊर्जा

प्रधानमंत्री द्वारा लॉन्च किया गया 1 लाख करोड़ का RDI स्कीम फंड देश में नवाचार की संस्कृति को प्रोत्साहित करने के लिए ऐतिहासिक पहल है। इस योजना के अंतर्गत निजी कंपनियों, स्टार्टअप्स, विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों को अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता दी जाएगी। यह फंड न केवल शोध को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि भारत को “विज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था” की दिशा में आगे बढ़ाएगा।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि “आज भारत स्टार्टअप क्रांति के साथ-साथ रिसर्च क्रांति की ओर बढ़ रहा है। हमारा लक्ष्य है कि अगले दस वर्षों में भारत विश्व के शीर्ष पांच इनोवेशन लीडर देशों में शामिल हो।” उन्होंने यह भी बताया कि देश में वर्तमान में 1 लाख से अधिक स्टार्टअप्स और 400 से ज्यादा इनक्यूबेशन सेंटर सक्रिय हैं, जिनमें से कई विज्ञान एवं तकनीक आधारित हैं।

विज्ञान को जन-आंदोलन बनाने की दिशा में बड़ा कदम

ESTIC 2025 केवल एक सम्मेलन नहीं, बल्कि विज्ञान को जन-आंदोलन बनाने का प्रयास है। इस मंच पर उद्योग, शिक्षा जगत और शोध संस्थानों के बीच “टेक्नोलॉजी कोलैबोरेशन नेटवर्क” तैयार करने की दिशा में समझौते किए जा रहे हैं। साथ ही, भारत की युवा पीढ़ी को विज्ञान और नवाचार में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करने हेतु कई इंटरएक्टिव सत्र, वैज्ञानिक प्रदर्शनियां और इनोवेशन शोकेस आयोजित किए जा रहे हैं।

सम्मेलन में विशेष रूप से “क्वांटम इंडिया मिशन, नेशनल सेमीकंडक्टर मिशन, ग्रीन हाइड्रोजन मिशन और स्पेस इनोवेशन नेटवर्क” से जुड़े पैनल चर्चाएं हुईं। इन चर्चाओं में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO), DRDO, BARC, IITs और निजी कंपनियों के विशेषज्ञों ने भाग लिया।

भारत माला एक्सप्रेसवे पर भीषण सड़क हादसा: जोधपुर में टेंपो-ट्रक टक्कर में 15 लोगों की मौत, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने जताया शोक

(जीएनएस)। जोधपुर। राजस्थान के जोधपुर जिले में रविवार को सुबह-सुबह एक दर्दनाक सड़क हादसे ने पूरे प्रदेश को झकझोर दिया। फलौदी क्षेत्र के मतोड़ा गांव के पास भारत माला एक्सप्रेसवे पर टेंपो ट्रैवलर और ट्रक की भीषण टक्कर में कम से कम 15 लोगों की मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। दुर्घटना इतनी भयावह थी कि टेंपो ट्रैवलर के परखच्चे उड़ गए और अधिकांश शवों को गैस कटर की मदद से निकालना पड़ा। पुलिस के अनुसार, मृतकों में सभी एक ही परिवार के सदस्य थे, जो जोधपुर के सूरसागर इलाके के रहने वाले थे। यह परिवार बीकानेर जिले के कोलायत मंदिर में पूजा-अर्चना के बाद कपिल मुनि आश्रम से लौट रहा था। हादसे के वक्त टेंपो ट्रैवलर तेज़ गति से एक्सप्रेसवे पर आगे बढ़ रहा था, तभी सामने से आ रहे ट्रक से उसकी जोरदार भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी तेज़ थी कि दोनों वाहनों के आगे के हिस्से पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। हादसे के तुरंत बाद फलौदी थाने की पुलिस टीम मौके पर पहुंची और स्थानीय ग्रामीणों की मदद से बचाव कार्य शुरू किया। कई राहगीरों ने भी मौके पर रुककर पुलिस की सहायता की। घायलों को पहले फलौदी के अस्पताल में भर्ती कराया गया, बाद में ग्रीन कॉरिडोर बनाकर जोधपुर एम्स भेजा गया। सभी मृतकों के शवों को ओसियां के सरकारी अस्पताल के मुर्दाघर में रखा गया है। जोधपुर के पुलिस आयुक्त ओम प्रकाश मथुरादास माथुर ने मौके का निरीक्षण किया और अस्पताल में घायलों के उपचार की व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने कहा, “यह एक बेहद दुखद दुर्घटना है। घायलों के बेहतर इलाज के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए गए हैं। प्रशासन पीड़ित परिवारों के संपर्क में है।”

देश के सर्वोच्च पदाधिकारियों ने भी इस दुर्घटना पर गहरा शोक व्यक्त किया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने X (पूर्व ट्विटर) पर पोस्ट करते हुए लिखा, “राजस्थान के फलौदी में हुए सड़क हादसे में कई लोगों की मौत की खबर अत्यंत दुखद है। मैं इस त्रासदी में अपने प्रियजनों को खोने वाले परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करती हूं और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करती हूं।” वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस हादसे पर शोक जताते हुए कहा कि “फलौदी में हुई दुर्घटना अत्यंत दुखद है। इस कठिन घड़ी में मेरी संवेदनाएं पीड़ित परिवारों और घायलों के साथ हैं।” प्रधानमंत्री कार्यालय ने घोषणा की कि प्रत्येक मृतक के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से 2 लाख रुपये की सहायता राशि और घायलों को 50,000 रुपये दिए जाएंगे।

राजस्थान पुलिस ने घटना की विस्तृत जांच के आदेश दे दिए हैं। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, टेंपो ट्रैवलर की रफ्तार अधिक थी और मोड़ पर नियंत्रण खोने से यह हादसा हुआ। पुलिस ने ट्रक चालक से पूछताछ शुरू कर दी है और दोनों वाहनों को जब्त कर लिया गया है।

राज्य सरकार ने मृतकों के अंतिम संस्कार के लिए आवश्यक सहायता मुहैया कराने के निर्देश दिए हैं। वहीं, जोधपुर संभाग के प्रभारी मंत्री ने कहा कि घायलों के इलाज में कोई कमी नहीं छोड़ी जाएगी।

जोधपुर का सूरसागर इलाका, जहां से मृतक परिवार ताल्लुक रखता था, हादसे की खबर मिलते ही शोक में डूब गया। स्थानीय लोगों ने बताया कि परिवार धार्मिक प्रवृत्ति वाला था और हर साल कोलायत यात्रा पर जाता था।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा – शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, जीवन-मूल्यों का साधन है

पतंजलि विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में 1454 विद्यार्थियों को उपाधि, बेटियों ने रचा इतिहास

(जीएनएस)। हरिद्वार। रविवार की सुबह हरिद्वार के पतंजलि विश्वविद्यालय का परिसर गौरव, अनुशासन और आध्यात्मिकता से सराबोर था। अवसर था विश्वविद्यालय के द्वितीय दीक्षांत समारोह का, जिसमें राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री अर्जित करना नहीं, बल्कि जीवन के उच्च मूल्यों — सदाचार, कर्तव्यनिष्ठा, सरलता और तपस्या — का संवाहक बनना है।

राष्ट्रपति ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा, “जब शिक्षा केवल बुद्धि को नहीं, हृदय को भी प्रकाशित करती है, तब वही राष्ट्र सच्चे अर्थों में विकसित होता है। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जो हमें बेहतर मनुष्य बनाए, न कि केवल प्रतियोगिता का साधन बने।”

समारोह में राष्ट्रपति ने 1454 विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान कीं, जिनमें 62 शोधार्थियों को ‘विद्या वारिधि’, 3 को ‘विद्या वाचस्पति’, 615 को परास्नातक और 774 को स्नातक की उपाधि दी गई। उन्होंने कहा कि “पतंजलि विश्वविद्यालय ने आधुनिक युग में वैदिक शिक्षा के पुनरुत्थान का कार्य किया है, और यह केवल भारत के लिए

नहीं, विश्व के लिए भी एक संदेश है।”

बेटियों की उपलब्धि बनी प्रेरणा

राष्ट्रपति ने विशेष प्रसन्नता व्यक्त की कि इस वर्ष उपाधि प्राप्त करने वालों में 64 प्रतिशत छात्राएँ हैं, जबकि पदक पाने वाली छात्राओं की संख्या लड़कों से चार गुना अधिक रही। उन्होंने कहा, “यह उपलब्धि उस ‘नए भारत’ की झलक है, जिसमें महिलाएँ नेतृत्व कर रही हैं। विकसित भारत का अर्थ तभी पूरा होगा जब उसकी बेटियाँ शिक्षित, सशक्त और आत्मनिर्भर हों।”

उनके संबोधन के दौरान सभागार तालियों से गूंज उठा जब उन्होंने कहा — “स्त्री शक्ति के बिना भारत की उन्नति अधूरी है, और बेटियों की यह सफलता उस अधूरे स्वप्न को पूर्ण करने की दिशा में बड़ा कदम है।”

योग और आयुर्वेद की परंपरा को आधुनिकता से जोड़ने वाला संस्थान

राष्ट्रपति ने पतंजलि विश्वविद्यालय की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह संस्थान “योग, आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा को आधुनिक विज्ञान और अनुसंधान की दृष्टि से” आगे बढ़ा रहा है। उन्होंने कहा, “भारत की प्राचीन परंपरा केवल अध्यात्म नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन विज्ञान है। पतंजलि विश्वविद्यालय उस परंपरा को नयी ऊर्जा दे रहा है — यही ‘स्वस्थ भारत, समर्थ भारत’ का वास्तविक मार्ग है।”

राज्यपाल ने कहा — यह भूमि अध्यात्म का प्राणकेंद्र है

उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) ने राष्ट्रपति का स्वागत करते हुए कहा, “देवभूमि उत्तराखंड केवल एक भौगोलिक पहचान नहीं, बल्कि योग, आयुर्वेद और अध्यात्म का प्राणकेंद्र है।” उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे अपने ज्ञान का उपयोग ‘विश्व कल्याण’ के लिए करें, न कि केवल रोजगार तक सीमित रहें। राज्यपाल ने राष्ट्रपति को ‘फ्लोरा ऑफ राष्ट्रपति भवन’ और ‘मेडिसिनल प्लांट्स ऑफ राष्ट्रपति भवन’ शीर्षक दो पुस्तकें भेंट कीं।

मुख्यमंत्री धामी बोले — यहां दिखता है विज्ञान और अध्यात्म का संगम

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु देश की उस संवेदना का प्रतीक हैं जो समाज के वंचित वर्गों को भी विकास की धारा में लाने का संकल्प रखती है। उन्होंने कहा, “पतंजलि विश्वविद्यालय में विज्ञान और अध्यात्म का संगम देखने को मिलता है। राज्य सरकार भी इसी दिशा में काम कर रही है।”

उन्होंने बताया कि दून विश्वविद्यालय में ‘सेंटर फॉर हिंदू स्टडीज़’, देहरादून में साइंस सिटी और हल्द्वानी में एस्ट्रो पार्क की स्थापना की जा रही है ताकि शिक्षा, शोध और भारतीय ज्ञान परंपरा को एक मंच पर लाया जा सके।

मेधावियों का सम्मान — बेटियों ने किया नाम रोशन

समारोह में राष्ट्रपति मुर्मु ने मेधावी विद्यार्थियों को पदक प्रदान किए। इनमें प्रमुख हैं — साध्वी देवपूजा (विश्वविद्यालय टॉपर – 90%), देवेंद्र सिंह (एमए संस्कृत व्याकरण – 94%), मानसी उर्फ साध्वी देववाणी (ट्रिपल गोल्ड मेडलिस्ट – बीए एवं एमए संस्कृत व्याकरण व एमए योगा साइंस), अजय कुमार (एमए दर्शन – 92%), रीता कुमारी (एमए संस्कृत व्याकरण – 90%), शालू भदौरिया (बीए दर्शन – 90%), अंशिका (बीए योगा साइंस – 87%), प्रीति पाठक (एमए साइकोलॉजी – 87%), पूर्वा (एमएससी योगा साइंस – 85%) और मैत्रेई (बीएससी योगा साइंस – 83%)।

डल झील की ठंडी हवा में दौड़ी उम्मीद की लहर: 11 देशों के 1500 धावकों ने कश्मीर मैराथन 2.0 में जगाई शांति और एकता की किरण

(जीएनएस)। श्रीनगर। रविवार की सुबह जब डल झील की सतह पर सूरज की पहली किरणें झिलमिलाईं, तब कश्मीर घाटी ने खेल, सौंदर्य और शांति का अनोखा संगम देखा। पोलो व्यू से शुरू होकर ज़बरवान की वादियों तक फैले कश्मीर मैराथन 2.0 में 11 देशों के 1500 से अधिक धावकों ने भाग लिया। खेल की इस वैश्विक सुबह ने श्रीनगर को फिर एक बार यह याद दिलाया कि घाटी अब संघर्ष नहीं, एकता और उम्मीद की नई दौड़ में आगे बढ़ रही है। सुबह ठीक छह बजे जब शुरुआत का संकेत दिया गया, तो हजारों की भीड़ ने ताली बजाकर धावकों का स्वागत किया। डल झील के किनारे दौड़ते एथलीटों की सांसों में ठंडी हवा का स्पर्श और दर्शकों की आवाज़ें गूँज उठीं — “कश्मीर आगे बढ़ रहा है।” आयोजन का संचालन पर्यटन विभाग कश्मीर ने जम्मू-कश्मीर खेल परिषद के सहयोग से किया। मुख्यमंत्री, पुलिस महानिदेशक, वरिष्ठ अधिकारी और कई बॉलीवुड कलाकार भी उपस्थित रहे, जिन्होंने प्रतिभागियों का हौसला बढ़ाया।

अंतरराष्ट्रीय भागीदारी और स्थानीय गौरव

मैराथन में जर्मनी, अमेरिका, केन्या, जापान, श्रीलंका, डेनमार्क, नेपाल और इथियोपिया जैसे देशों से धावकों की भागीदारी ने इसे विश्वस्तरीय रूप दिया। कश्मीर के पर्यटन निदेशक राजा याकूब ने कहा, “यह दौड़ इस घाटी की जिजीविषा का प्रतीक है। पहलगाम जैसी दुखद घटनाओं के बावजूद यहां के लोगों ने दिखाया है कि आतंक की छाया नहीं, खेल और शांति ही असली कश्मीर की पहचान हैं।”

डल झील और ज़बरवान रेंज का अनोखा मार्ग

मैराथन का रास्ता खुद एक कलाकृति था — झील के किनारे, चिन्नार के पेड़ों की छांव में और दूर बर्फ से ढके पहाड़ों की ओर नज़र डालते हुए। कई अंतरराष्ट्रीय धावकों ने इसे “दुनिया का सबसे खूबसूरत ट्रैक” कहा। केन्या की प्रसिद्ध एथलीट थेरसिया वान्येकी ने कहा, “मैंने दुनिया के कई देशों में दौड़ लगाई है, लेकिन कश्मीर जैसा शांत और प्रेरक वातावरण कहीं नहीं मिला। यहां हर सांस में प्रकृति बोलती है।”

खेल और संस्कृति का संगम

मैराथन दो श्रेणियों में आयोजित हुई — पूर्ण मैराथन (42 किमी) और हाफ मैराथन (21 किमी)। विजेताओं को कुल 25 लाख रुपये की पुरस्कार राशि दी गई। दौड़ के दौरान घाटी की सड़कों पर स्थानीय बच्चे, स्कूली छात्र, और बुजुर्ग दर्शक हाथों में तिरंगे और “रन फॉर पीस” के बैनर लिए खड़े दिखाई दिए। शहर की हवा में खेल भावना और उमंग का ऐसा उत्सव था, जो लंबे अरसे तक याद रखा जाएगा।

कश्मीर का बदलता चेहरा

इस आयोजन ने यह साबित कर दिया कि कश्मीर अब सिर्फ एक भौगोलिक पहचान नहीं, बल्कि नवीन ऊर्जा, पर्यटन और एकता का प्रतीक बन चुका है। पिछले कुछ वर्षों में बढ़ते खेल आयोजन, पर्यटकों की रिकॉर्ड संख्या और स्थानीय युवाओं की सक्रिय भागीदारी ने यह संदेश दिया है कि घाटी की नई कहानी अब भय की नहीं, भविष्य की है।

मोहन की गोद में मनमोहक नन्हा कान्हा सीएम यादव की तस्वीर ने जीता देशभर का दिल

(जीएनएस)। भोपाल। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की एक तस्वीर ने सोशल मीडिया पर तूफान ला दिया है। 1 नवंबर, मध्यप्रदेश स्थापना दिवस के अवसर पर खींची गई यह तस्वीर आज करोड़ों लोगों की भावनाओं का केंद्र बन गई है। तस्वीर में मुख्यमंत्री मोहन यादव एक नन्हें बालक को गोद में लिए हैं, जिसने श्रीकृष्ण का रूप धारण किया हुआ है। बच्चे की मासूम मुस्कान और मुख्यमंत्री की करुणा से भरी नजरों ने इस पल को भावनाओं का एक जीवंत प्रतीक बना दिया। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे ‘मोहन’ की गोद में स्वयं ‘कान्हा’ विराजमान हों।

इस तस्वीर ने लोगों के मन में यह संदेश और भी गहरा कर दिया कि मुख्यमंत्री मोहन यादव के भीतर श्रद्धा, सेवा और संस्कृति का भाव कितना गहराई से बसा है। उन्होंने जिस सहजता और स्नेह के साथ इस नन्हे कान्हा को अपनी गोद में लिया, उसने स्पष्ट कर दिया कि राजनीति उनके लिए केवल शासन का माध्यम नहीं, बल्कि धर्म, संस्कृति और अध्यात्म की सेवा का विस्तार है।

डॉ. यादव के सार्वजनिक जीवन में श्रीकृष्ण की भक्ति का भाव पहले दिन से झलकता है।

मुख्यमंत्री बनने के बाद से उन्होंने लगातार भगवान श्रीकृष्ण से जुड़े कार्यों को बढ़ावा दिया है। उन्होंने ‘श्रीकृष्ण पाथेय’ न्यास की स्थापना की, जो भगवान के मध्यप्रदेश प्रवास से जुड़े स्थलों का संरक्षण और विकास करेगा। उनका मानना है कि “जहां-जहां श्रीकृष्ण के चरण पड़े, वे सभी स्थल तीर्थ बनेंगे।” उज्जैन, महेश्वर, ओंकारेश्वर और सांदीपनि आश्रम जैसे स्थानों को ‘कृष्ण पथ’ का हिस्सा घोषित कर उन्होंने प्रदेश की धार्मिक पहचान को नया आयाम दिया है।

सीएम यादव की पहल केवल धार्मिक आयोजन तक सीमित नहीं रही। उन्होंने ‘गीता भवन योजना’ की शुरुआत की, जिसके अंतर्गत राज्य के 413 नगरीय निकायों में गीता भवन बनाए जा रहे हैं। लगभग 2,875 करोड़ रुपये की इस योजना का उद्देश्य है कि हर नगर में गीता के उपदेशों का अध्ययन, संवाद और साधना हो सके। उनकी ही पहल पर 11 दिसंबर 2024 को भोपाल में गीता जयंती के अवसर पर 7,000 से अधिक आचार्यों और बटुकों ने सामूहिक ‘कर्म योग’ अध्याय का पाठ किया था, जो गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ।

सीएम यादव ने गौसेवा को भी अपनी सरकार की प्राथमिकता में सबसे ऊपर रखा है। उन्होंने गौशालाओं को प्रति गाय मिलने वाली अनुदान राशि 20 रुपये से बढ़ाकर 40 रुपये प्रतिदिन कर दी। यही नहीं, उन्होंने घोषणा की कि पशुपालन विभाग अब ‘गौपालन विभाग’ के नाम से जाना जाएगा। उनकी दृष्टि में “गौसेवा भारतीय संस्कृति की आत्मा” है।

मुख्यमंत्री ने ग्रामीण विकास को भी श्रीकृष्ण की शिक्षाओं से जोड़ते हुए ‘मुख्यमंत्री वृंदावन ग्राम योजना’ शुरू की है। इस योजना के तहत हर गांव को आत्मनिर्भर, जैविक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय दृष्टि से समृद्ध बनाया जाएगा — ऐसा गांव जो आधुनिक सुविधाओं से लैस हो लेकिन अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा रहे।

शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने परंपरा और आधुनिकता का सुंदर संगम किया है। हाल ही में उन्होंने प्रदेश के ‘सीएम राइज स्कूलों’ का नाम बदलकर ‘सांदीपनि स्कूल’ रखने की घोषणा की, ताकि छात्रों को बताया जा सके कि शिक्षा केवल परीक्षा का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के निर्माण का संस्कार है।

सीएम यादव ने राज्य में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और गोवर्धन पूजा को राजकीय स्तर पर मनाने का निर्णय भी लिया। इन आयोजनों में वे स्वयं भाग लेते हैं और गौपूजन कर भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परंपरा को पुनर्जीवित करते हैं। राजनीतिक मंचों से लेकर जनसभाओं तक, हर जगह सीएम मोहन यादव अपने भाषणों में श्रीकृष्ण का उल्लेख करते हैं। उनका यह वाक्य “जहां गाय, वहां गोकुल — जो गाय की सेवा करे, वही गोपाल” अब जनता के बीच लोकप्रिय नारा बन गया है। वे कहते हैं, “एक ओर जहां अयोध्या में श्रीराम मुस्कुरा रहे हैं, अब मथुरा में भी श्रीकृष्ण मुस्कुराएंगे।”

चक्रवात से गुजरात को बचाने वाले अमित अरोड़ा ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी पर फिर किया कमाल, लौह पुरुष की 150वीं जयंती को बनाया ऐतिहासिक आयोजन

(जीएनएस)। अहमदाबाद। यह कहानी एक ऐसे अधिकारी की है जिसने अपनी मेहनत, सूझबूझ और अदम्य इच्छाशक्ति से दो बार इतिहास रचा — पहली बार तब जब गुजरात विनाशकारी चक्रवात ‘बिपरजॉय’ की चपेट में था, और दूसरी बार जब लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर पूरे देश की निगाहें ‘स्टैच्यू ऑफ यूनिटी’ पर टिकी थीं। ये अधिकारी हैं 2012 बैच के आईएएस अमित अरोड़ा, जो आज न सिर्फ गुजरात बल्कि पूरे देश की नौकरशाही में एक मिसाल बन चुके हैं।

अमित अरोड़ा वर्तमान में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) के पद पर तैनात हैं। उनके नेतृत्व में ‘राष्ट्रीय एकता दिवस’ यानी 31 अक्तूबर का आयोजन इतने बड़े पैमाने पर हुआ कि इसे ‘मिनी गणतंत्र दिवस’ कहा जाने लगा। सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित इस समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल, लौह पुरुष के परिवारजन और करीब 12,000 से अधिक लोगों की उपस्थिति रही। सुबह की एकता परेड से लेकर ‘सूर्य किरण’ विमानों के एअर शो तक, हर कार्यक्रम अनुशासन और गरिमा के साथ संपन्न हुआ — और इसका श्रेय जाता है अमित अरोड़ा की शांत लेकिन प्रभावी प्रशासनिक शैली को।

यह आयोजन आसान नहीं था। कार्यक्रम से कुछ दिन पहले से ही गुजरात में लगातार बेमौसम बारिश हो रही थी। 30 अक्तूबर को जब प्रधानमंत्री मोदी वडोदरा पहुंचे, तो खराब मौसम के बावजूद वे सड़क मार्ग से केवडिया पहुंचे। हर किसी की नजर इस पर थी कि मौसम की मार कहीं समारोह पर न पड़ जाए, लेकिन अमित अरोड़ा ने अपनी टीम के साथ ऐसा बेहतरीन समन्वय किया कि न केवल सभी कार्यक्रम सफलतापूर्वक हुए, बल्कि सुरक्षा और प्रबंधन के लिहाज से यह आयोजन एक मानक बन गया।

यह पहली बार नहीं था जब अमित अरोड़ा ने कठिन परिस्थितियों में अपनी क्षमता का लोहा मनवाया। जून 2023 में जब गुजरात के कच्छ जिले पर भीषण चक्रवात ‘बिपरजॉय’ ने दस्तक दी थी, तब अरोड़ा वहां कलेक्टर के रूप में तैनात थे। चक्रवात की तीव्रता ऐतिहासिक रूप से सबसे अधिक थी, लेकिन उनकी कुशल रणनीति और समय पर लिए गए निर्णयों की वजह से कोई जनहानि नहीं हुई। हजारों लोगों को सुरक्षित निकाला गया और बिजली, जलापूर्ति जैसी मूल सेवाओं को रिकॉर्ड समय में बहाल कर दिया गया। उस समय अरोड़ा पीजीवीसीएल (पश्चिम गुजरात विज कंपनी लिमिटेड) के ज्वाइंट एमडी भी थे और उन्होंने एनडीआरएफ, सेना और स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर ऐसी टीमवर्क दिखाई कि पूरा देश उनकी सराहना करने लगा।

बरेली, उत्तर प्रदेश के मूल निवासी अमित अरोड़ा इंजीनियरिंग की पृष्ठभूमि से आते हैं। उन्होंने आईआईटी बॉम्बे से कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग में बी.टेक और एम.टेक की डुअल डिग्री प्राप्त की है। आईआईटी में रहते हुए ही उनमें नेतृत्व और संकट प्रबंधन के गुण उभरने लगे थे, जो बाद में प्रशासनिक सेवा में उनकी सबसे बड़ी ताकत बने। उनकी पत्नी प्रीति शर्मा भी उच्च शिक्षित हैं और सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहती हैं।

अपने अब तक के करियर में अरोड़ा ने गोधरा, राजकोट और वडोदरा जैसे कई संवेदनशील जिलों में काम किया है। राजकोट के नगर आयुक्त के रूप में उन्होंने स्मार्ट सिटी मिशन के तहत कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं को आगे बढ़ाया, वहीं कच्छ में उनके कार्यकाल को ‘संवेदनशील और दृढ़ नेतृत्व’ का आदर्श उदाहरण कहा गया।

अरोड़ा के सहकर्मी उन्हें “लो प्रोफाइल लेकिन हाई परफॉर्मेंस” अफसर के रूप में जानते हैं। वह प्रचार से दूर रहते हैं लेकिन परिणामों से अपनी पहचान बनाते हैं। उनके वरिष्ठ अधिकारी मानते हैं कि वे हर काम को टीम भावना और तकनीकी दक्षता के साथ पूरा करते हैं। यही कारण है कि जब सरकार को स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की जिम्मेदारी ऐसे व्यक्ति को सौंपनी थी जो न केवल आयोजन की भव्यता को संभाल सके बल्कि सुरक्षा और मौसम जैसी अप्रत्याशित चुनौतियों का भी सामना कर सके, तब नाम आया — अमित अरोड़ा का।

अब जब सरदार पटेल की 150वीं जयंती समारोह की भव्यता की चर्चा देशभर में हो रही है, तो यह कहना गलत नहीं होगा कि जिस लौह पुरुष की मूर्ति के नीचे यह आयोजन हुआ, उसकी आत्मा शायद गर्व से मुस्कुरा रही होगी — क्योंकि इस बार आयोजन की कमान भी एक “लौह इच्छाशक्ति” वाले अधिकारी के हाथों में थी।

अमित अरोड़ा ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि संकट हो या उत्सव — अगर नेतृत्व दृढ़, विचार स्पष्ट और दृष्टि समर्पित हो, तो असंभव भी संभव हो जाता है।